Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَهُوَالْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ

(सूरत ईनाम : 93)

अनुवाद : और वह अपने बंदों पर जलाली शान के साथ ग़ालिब है और वह तुम पर हिफ़ाज़त करने वाले (निगरान) भेजता है यहां तक कि जब तुम में से किसी को मौत आ जाए तो उसे हमारे रसूल (फ़रिश्ते) वफ़ात दे देते हैं और वे किसी पहलू को नज़रअंदाज़ नहीं करते।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 24

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

15 जुल्कादा 1443 हिज्री कमरी, 16 अहसान 1401 हिज्री शम्सी, 16 जून 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

मांगने की निंदा और इससे बचने की प्रेरणा

मुशतबिहात से बचने का आदेश

(2051) हज़रत नुमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा : नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हलाल भी ज़ाहिर है और हराम भी ज़ाहिर है और उनके मध्य कुछ संदेहास्पद चीज़ें हैं। अतः जिसने वे चीज़ छोड़ दी जिस में गुनाह का संदेह है तो वे स्पष्ट गुनाहों को प्रथम छोड़ने वाला होगा और जिसने ऐसे अमर के इर्तिकाब का साहस किया जिस में गुनाह की सम्भावना है तो क़रीब है कि वह स्पष्ट गुनाह में मुबतला हो जाएगा और ना-फ़रमानी की बातें अल्लाह की तरफ़ से मना की हुई चरागाह हैं। जो व्यक्ति चरागाह के इर्द-गिर्द चराए, क़रीब है कि उस में जा पड़े।

(2056) अब्दुल्लाह बिन ज़ैद माज़नी से रिवायत है कि एक व्यक्ति के विषय में नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में शिकवा किया गया कि उसे नमाज़ में (वुज़ू टूटने के विषय में) वस्वसे से उठते हैं। इस सूरत में क्या वह नमाज़ तोड़ दे?आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: नहीं जब तक आवाज़ न सुने या बू पाए। और (मुहम्मद) इब्ने अबी हफ़सा ने ज़ोहरी से नक़ल किया कि वुज़ू की उस वक़्त ज़रूरत है जबकि तू बू पाए या आवाज़ सुने।

(सही बुख़ारी भाग 4, किताबुल बीयू, मुद्रित 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

सिद्दीक़ के मर्तबा पर क़ुरआन-ए-करीम की मार्फ़त और इस से मुहब्बत और उसके रहस्यों और बिन्दुओं पर इत्तिला मिलती है

शहीद उस दर्जा और स्थान का नाम भी है जहां इन्सान अपने हर काम में अल्लाह तआला को देखता है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

फिर दूसरा मर्तबा सिद्दीक़ का है। सिदक़ कामिल उस वक़्त तक डूबा नहीं होता जब तक सच्ची तौबा के साथ सिदक़ को न खींचे। क़ुरआन-ए-करीम समस्त सदाक़तों का मजमूआ और पूर्ण सिदक़ है। जब तक ख़ुद सादिक़ न बने, सिदक़ के कमाल और मुरातिब से क्योंकर वाक़िफ़ हो सकता है।

सिद्दीक़ के मर्तबा पर क़ुरआन-ए-करीम की मार्फ़त और इस से मुहब्बत और इस के रहस्यों और तथ्यों पर इत्तिला मिलती है, क्योंकि झूठ झूठ को खींचता है, इसलिए कभी भी झूठा क़ुरआन-ए-करीम के रहस्यों और हक़ायक़ से आगाह नहीं हो सकता। यही वजह है कि لَا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (अल् वाक्य **:80**) फ़रमाया गया है।

फिर तीसरा मर्तबा शहीद का है। आम लोगों ने शहीद के अर्थ केवल यही समझ रखे हैं कि जो व्यक्ति लड़ाई में मारा गया या दरिया में डूब गया या महामारी में मर गया इत्यादि। परन्तु मैं कहता हूँ कि इसी पर इकतिफ़ा करना और इसी हद तक इस को महिदूद रखना मोमिन की शान से दूर है। शहीद असल में वह व्यक्ति होता है जो ख़ुदा तआला से इस्तिक़ामत और सकीनत की क़ुव्वत पाता है और कोई भूचाल और हादसा उस को मुतग़य्यर नहीं कर सकता। वे मुसीबतों और मुश्किलात में डटा रहता है यहां तक कि अगर केवल ख़ुदा तआला के लिए उस को जान भी देनी पड़े तो फ़ौक़ुलआदत इस्तिक़लाल उस को मिलता है और वे बन्दे किसी किस्म का रंज या हसरत महसूस किए अपना सिर रख देता है और चाहता है कि बार-बार मुझे ज़िंदगी मिले और बार-बार उस को अल्लाह की राह में दूं। एक ऐसी लज़्ज़त और आनंद उसकी रूह में होता है कि हर तलवार जो उस के बदन पर पड़ती है और हर मार जो उस को पीस डाले, उसको पहुँचती है वह इस को एक नई ज़िंदगी, नई मुसर्रत और ताज़गी अता करती है। यह हैं शहीद के अर्थ।

फिर यह शब्द शहद से भी निकला है। इबादत-ए-शाक़ा जो लोग बर्दाश्त करते हैं और ख़ुदा की राह में हर एक तल्ख़ी और कुदूरत को झेलते हैं और झेलने के लिए तैयार हो जाते हैं वे शहद की तरह एक मीठी और मिठास पाते हैं और जैसे शहद فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ (अल् नहल : 70) का मिस्दाक़ है। ये लोग भी एक तिरयाक़ होते हैं। इन की सोहबत में आने वाले बहुत से रोगों से निजात पा जाते हैं।

और फिर शहीद इस दर्जा और मुक़ाम का नाम भी है जहां इन्सान अपने हर काम में अल्लाह तआला को देखता है या कम से कम ख़ुदा को देखता हुआ यक़ीन करता है। उस का नाम एहसान भी है।

(मल्-फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 375 मुद्रित 2018 क़ादियान)

★ ★ ★

इस आयत में दूध के पैदा होने का वह तरीक़ बताया गया है जो उस वक़्त दुनिया को मालूम नहीं था और बाद में ज्ञात हुआ है क़ुरआन-ए-करीम के शब्द विज्ञान की वर्तमान खोजों के बिल्कुल मुताबिक़ हैं

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः नहल आयत : 67 وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

यह आयत इस बात पर भी शाहिद है कि क़ुरआन-ए-करीम का नाज़िल करने वाला दुनिया का ख़ालिक़ भी है क्योंकि इस में दूध के पैदा होने का वह तरीक़ बताया गया है जो उस वक़्त दुनिया को मालूम नहीं था और बाद में दरयाफ़त हुआ है और वह यह कि आहार पेट में से अंतड़ियों में आता है और इस से फर्स् तैयार होता है, इस फर्स् से एक माद्दा ख़ून बन जाता है और इस ख़ून से दूध बनता है। यही वह हक़ीक़त है जो नुज़ूल क़ुरआन के बाद की तहक़ीक़ से साबित हुई है। इसलिए बाद के लेखकों ने इबतिदाई लेखकों की ग़लती को पेश करके ज़ाहिर किया है कि दरहक़ीक़त फर्स् से ख़ून और ख़ून से दूध बनता है। परन्तु जो तशरीह उन्होंने वर्णन की है वे भी पूरी तरह विज्ञानं के मुताबिक़ नहीं लेकिन क़ुरआन-ए-करीम के शब्द विज्ञान की वर्तमान तहक़ीक़ के बिल्कुल मुताबिक़ हैं और वह यह है कि ग़िज़ा मादा से अंतड़ियों में जाती है वहां से उसका हज़म होने वाला लतीफ़ हिस्सा कुछ उरूक़ के द्वारा से एक हिस्सा सीधा दिल तक जाता है और वरीदों में गिरकर फ़ौरन ख़ून बन जाता है और एक और लतीफ़ हिस्सा मादा से सीधे जिगर में जा कर वहां से नालियों के द्वारा दिल में गिर कर ख़ून बन जाता है। फिर यह ख़ून जब थनों के क़रीब जाता है तो वहां अल्लाह तआला ने ऐसे सामान पैदा किए हैं कि वह ख़ून वहां जा कर दूध बन जाता है।

इस हक़ीक़त से पुराने ज़माना के लोग ऐसे अपरिचित थे कि लेखकों ने इस आयत के माने करने में सख़्त मुश्किलात महसूस की हैं और प्रचलित वक़्त ख़्यालात के मुताबिक़ यह समझा है कि शायद फर्स् और ख़ून के बनने के मध्य कोई तग़य्युर ऐसा होता है जिससे दूध बनता है। इसलिए साहिब-

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

मैं इस तलवार को जिसे अल्लाह ने कुफ़्फ़ार के लिए नयाम से निकाला है फिर नयाम में नहीं रखूँगा। (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताएं और गुण

सज्जाह पुत्री हारिस और मालिक बिन नुवेरह के ख़िलाफ़ की जाने वाली मुहिम्मात का विस्तारपूर्वक वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 मई 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के समय के जो फ़ित्ने थे उनके ख़िलाफ़ जो मुहिम्मात हुईं उनका वर्णन हो रहा था। इस विषय में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की बुतहा के इलाक़ा की ओर मालिक बिन नुवेरह की तरफ़ पेशक़दमी की तफ़सील यूं वर्णन हुई है। बुतहा बनू असद के इलाक़े में एक चशमे का नाम है। मालिक बिन नुवेरह का सम्बन्ध बनू तमीम की एक शाख़ बनू यरबू से था। उस ने 9 हिज्री में अपनी क़ौम के साथ मदीना आकर इस्लाम क़बूल किया। मालिक बिन नुवेरह अपनी क़ौम के सरदारोँ में से एक था। अरब के मशहूर बहादुर और शहसवारों में इस का शुमार होता था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस को अपने क़बीला की ज़कात के अम्वाल वसूल करने और जमा करने की डयूटी सपुर्द करते हुए आमिल-ए-ज़कात के ओहदे पर निर्धारित किया था लेकिन जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई और अरब में इर्तिदाद और बग़ावत की लहर उठी तो मालिक बिन नुवेरह भी मुर्तद होने वालों में से एक था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की ख़बर उसको पहुंची तो उसने ख़ुशी और मुसर्रत का जश्न मनाया। इस के घर की औरतों ने मेहंदी लगाई, ढोल बजाय और ख़ूब फ़र्हत-ओ-शादमानी का इज़हार किया और अपने क़बीले के इन मुस्लमानों को क़तल किया जो ज़कात की फ़र्ज़ीयत के क़ायल होने के साथ साथ ज़कात की रक़म को मुस्लमानों के मर्कज़ अर्थात मदीना में भिजवाने के भी क़ायल थे। अतः यह भी बात याद रखने वाली है कि हर एक व्यक्ति जिसको सज़ा दी गई या जिसके ख़िलाफ़ सख़्ती के कदम उठाए गए उसने मुस्लमानों को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश की थी केवल यही नहीं कि मुर्तद हो गए थे।

बहरहाल इस ज़िमन में मज़ीद है कि उसने एक तरफ़ तो ज़कात देने से इन्कार किया और ज़कात के जमा शूदा अम्वाल अपनी क़ौम के लोगों को वापस कर दिए और दूसरी तरफ़ नबुव्वत का झूठा दावा करने वाली बागिया सजाह पुत्री हारिस के साथ शामिल हो गया जो कि एक बहुत बड़ा लश्कर लेकर मदीना पर हमला करने के लिए आई थी। (अलासाबा फ़ी तमीईज़ अल्-सहाबा, भाग 5 पृष्ठ 560 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ अबू अलंसर अनुवादक, पृष्ठ 598 713 मुश्ताक़ बुक कॉर्नर लाहौर)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 63 ज़व्वार एकेडेमी कराची)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 1पृष्ठ 527)

सज्जाह का परिचय यह है कि सज्जाह पुत्री हारिस उसका नाम था। उम्मे सादिर उपनाम था। अरब की एक काहिना थी और उन चंद नबुव्वत का दावा करने वालों ने और बाग़ी क़बाइली सरदारोँ में से थे जो अरब में इर्तिदाद से थोड़ी मुद्दत पहले या उसके दौरान नमूदार हुए थे। सज्जाह क़बीला बनू तमीम से ताल्लुक़ रखती थी और माँ की ओर से उस का गोत्र क़बीला बनू तग़लब से जा मिलता था जो अक्सर मसीही थे। सज्जाह ख़ुद भी मसीही थे और अपने मसीही क़बीला और ख़ानदान के बिना पर मसीहीयत की अच्छी ख़ासी आलिम औरत थी। यह इराक़ से मुरीदों के साथ आई थी और मदीना पर हमला का इरादा रखती थी। कुछ इतिहासकार का कहना है कि सज्जाह ईरानियों की साज़िश के तहत अरब में दाख़िल हुई थी ताकि हालात को देखकर ईरानी हुकूमत के ज़वाल पज़ीर इक़तिदार को थोड़ा सँभाला दिया जा सके। बहरहाल सज्जाह इन अवामिल से प्रभावित हो कर अरब द्वीप में दाख़िल हुए। यह तिब्बी अमर था कि वह सबसे पहले अपनी क़ौम बनू तमीम में पहुंचे। एक गिरोह ज़कात अदा करने और ख़लीफ़-ए-रसूलुल्लाह की इताअत करने पर तैयार था लेकिन इस कबील का दूसरा फ़रीक़ उसकी मुख़ालिफ़त कर रहा था। एक तीसरा फ़रीक़ भी था जिसकी समझ में नहीं आता था कि क्या करे और क्या न करे। बहरहाल इस मतभेद ने इतनी शिद्दत इख़तियार की कि बनू तमीम ने आपस ही में लड़ना और जदाल और क़िताल शुरू कर दिया। इसी समय में इन क़बायल ने सज्जाह के आने की ख़बर सुनी और उन्हें ये भी मालूम हुआ कि सज्जाह मदीना पहुंच कर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़ौजों से जंग करने का इरादा रखती है। फिर तो मतभेद ने मज़ीद वुसअत इख़तियार कर ली। सज्जाह इस इरादे से बढ़ती चली आ रही थी कि वह अपने अज़ीमुश्शान लश्कर के हमराह अचानक बनू तमीम में पहुंच जाएगी और अपनी नबुव्वत का ऐलान करके उन्हें अपने आप पर ईमान लाने की दावत देगी। सारा क़बीला बिलइत्तेफ़ाक़ उस के साथ हो जाएगा और उयैना की तरह बनू तमीम भी उस के विषय में यह कहना शुरू कर देंगे कि बनू यर्बू की नाबिय्या क़ुरैश के नबी से बेहतर है क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गए हैं और सज्जाह ज़िंदा है। इसके बाद वह बनू तमीम को हमराह लेकर मदीना की तरफ़ कूच करेगी, यह उसका प्लान था, और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के लश्कर से मुक़ाबला के बाद विजय हो कर मदीना पर क़ाबिज़ हो जाएगी। बहरहाल सज्जाह और मालिक बिन नुवेरह का आपस में सम्पर्क भी हुआ। सज्जाह अपने लश्कर के हमराह जब बनू यरबू की हदूद पर पहुंच गई तो वहां ठहर गई और क़बीला के सरदार मालिक बिन नुवेरह को बुला कर मुसालेहत करने और मदीना पर हमला करने की ग़रज़ से अपने साथ चलने की दावत दी। मालिक ने सुलह की दाअवत तो क़बूल कर ली लेकिन उसने उसे मदीना पर चढ़ाई के इरादे से बाज़ रहने का मश्वरा दिया और कहा कि मदीना पहुंच कर अबू बकर की फ़ौजों का मुक़ाबला करने से बेहतर यह है कि पहले अपने क़बीला के मुख़ालिफ़ अंसर का सफ़ाया कर दिया जाए। सज्जाह को भी यह बात पसंद आई और उसने कहा कि जो तुम्हारी मर्ज़ी है। मैं तो बनू यर्बू की एक औरत हूँ जो तुम कहोगे वही करूँगी। सज्जाह ने मालिक के इलावा बनू तमीम के दूसरे सरदारोँ को भी मुसालहत की दावत दी लेकिन वक़ीअ के सिवा किसी ने यह दाअवत क़बूल नहीं की। इस पर सज्जाह ने मालिक, वक़ीअ और अपने लश्कर के हमराह दूसरे सरदारोँ पर धावा बोल दिया। घमासान की जंग हुई जिसमें जानबीन की बड़ी संख्या, आदमी क़तल हुए और एक ही क़बीले के लोगों ने एक दूसरे को गिरफ़्तार कर लिया लेकिन कुछ ही अरसे के बाद मालिक और वकीअ ने यह महसूस किया कि उन्होंने इस औरत की इत्तिबा करके सख़्त ग़लती की है। इस पर उन्होंने दूसरे सरदारोँ से

शेष पृष्ठ 6 पर

यदि केवल घर के मर्द और महिलाएं हों तो महिलाएं लुक़मा दे सकती है, लेकिन ग़ैर मर्द हों तो हसब-ए-इर्शाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किसी भूल, के समय ताली बजायगी

महिलाएं इक़ामत नहीं कहेगी चाहे घर में ही नमाज़ हो रही हो क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसकी आज्ञा नहीं दी

हुकूमती बैंकों या हुकूमती मालीयाती विभागों में जमा करवाए जाने वाली रक़ूम पर मिलने वाली अधिक रक़म सूद शुमार नहीं होती क्योंकि यह अपने सरमाया को भलाई के कामों पर लगाते हैं

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त15)

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ विनीत की मुलाक़ात तिथि 13 अप्रैल 2021 ई. में ख़ादिम के निवेदन करने पर कि क्या किसी ऑनलाइन सिस्टम के तहत नमाज़ तरावीह अदा की जा सकती है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने राहनुमाई फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया :

उत्तर : यदि मस्जिद और उसके पीछे घर एक ही location में हूँ जैसा कि इस्लामाबाद यू.के में मस्जिद मुबारक और इसके अक़ब में कारकुनान के घर हैं तो लाऊड स्पीकर और एफ़. ऐम रेडियो इत्यादि के संचार माध्यम से जिसके टूटने की बहुत कम सम्भावना होती हैं केवल मजबूरी की हालत में जैसा कि आजकल कोरोना वायरस की महामारी की वजह से मजबूरी है, नमाज़ तरावीह और अन्य नमाज़ें पढ़ी जा सकती हैं लेकिन यदि मस्जिद और मकानात अलग locations में हों या मकानात मस्जिद के आगे हों तो ऐसे घरों के मुक़ीम इस तरह मस्जिद में होने वाली नमाज़ों की इक़तिदा में नमाज़ों की अदायगी नहीं कर सकते। बल्कि वे अपने अपने घरों में अपनी बाजमाअत नमाज़ पढ़ सकते हैं।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में विनीत ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि आजकल मजबूरी के हालात में जब कि घर वाले लोग घर पर नमाज़ बाजमाअत अदा करें तो क्या महिलाएं नमाज़ बाजमाअत के लिए इक़ामत कह सकती है, तथा इमाम के भूलने पर लुक़मा दे सकती है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

उत्तर : यदि केवल घर के मर्द और महिलाएं हों तो लुक़मा दे सकती है, लेकिन ग़ैर मर्द हों तो हसब-ए-इर्शाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किसी भूल, सहव के कारण में ताली बजायगी। लुक़मा नहीं देगी या सुब्हानल्लाह नहीं कहेगी।

तथा फ़रमाया : महिलाएं इक़ामत नहीं कहेगी ख़ाह घर में ही नमाज़ हो रही हो क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी आज्ञा नहीं दी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में भी आता है कि आप जब किसी मजबूरी की वजह से घर पर नमाज़ अदा करते थे और हज़रत अम्मां जान को नमाज़ में अपने साथ खड़ा कर लिया करते थे (हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हज़रत अम्माँ-जान रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ खड़े करने की मजबूरी भी हज़रत अम्माँ-जान रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाई है) लेकिन यह कहीं नहीं आता कि अपने हज़रत अम्मां जान रज़ियल्लाहु अन्हा को इक़ामत कहने का इरशाद फ़रमाया हो। इसलिए इक़ामत मर्द ख़ुद ही कहेगा और वैसे भी इक़ामत के सम्बन्ध में तो हदीस में भी आता है कि आवश्यकता के समय इमाम ख़ुद भी कह सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने इरशाद मुबारक में जिस हदीस की तरफ़ इशारा फ़रमाया वह सुन्न तिरमिज़ी में अम्र बिन उस्मान बिन याली बिन मर्राह रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है, जिसे वह अपने पिता से और वह उनके दादा (हज़रत याली बिन मर्राह रज़ियल्लाहु अन्हो) से रिवायत करते हैं कि वो नबी अकर्म सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ यात्रा में थे। इसलिए जब वे एक तंग जगह में पहुंचे तो नमाज़ का वक़्त हो गया। वहां ऊपर आसमान से बारिश बरसने लगी और नीचे ज़मीन पर कीचड़ हो गया। अतःरसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी सवारी पर सवार रहते हुए अज़ान दी और इक़ामत कही। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी सवारी आगे की और इशारों से उन्हें नमाज़ पढ़ाते हुए उनकी इमामत करवाई। आप सज्दे में रुकवा से अधिक झुकते थे।

(जामे तिरमिज़ी, किताब الصلاة باب مَا جَاءَ فِي الصَّلَاةِ عَلَى الدَّابَّةِ فِي الطِّينِ وَالْمَطَرِ)

प्रश्न : अरब के देश से एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किया कि मिल्क-ए-यमीन से क्या मुराद है। तथा तलाक़ की सही शरायत क्या हैं और एक दफ़ा ज़ुबनी तलाक़ कहने से तलाक़ होने के सम्बन्ध में क्या आदेश है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 14 जनवरी 2020 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर प्रदान फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : इस्लाम के आरंभिक ज़माना में जबकि इस्लाम के दुश्मन मुसलमानों को तरह-तरह के ज़ुल्मों का निशान बनाते थे और यदि किसी ग़रीब मज़लूम मुसलमान की महिलाएं उनके हाथ आ जाती तो वे उसे लौंडी के तौर पर अपनी महिलाओं में दाख़िल कर लेते थे। इसलिए جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا की क़ुरआन शिक्षा के अनुसार दुश्मन इस्लाम की ऐसी महिलाएं जो इस्लाम पर हमला करने वाले लश्कर के साथ उनकी सहायता के लिए आती थीं और इस ज़माना के रिवाज के अनुसार जंग में बतौर लौंडी के क़ैद कर ली जाती थीं।और फिर दुश्मन की ये महिलाएं तावान की अदायगी या मुकातबत के तरीक़ को इख़तियार करके जब आज़ादी भी हासिल नहीं करती थीं तो चूँकि उस ज़माने में ऐसे जंगी क़ैदियों को रखने के लिए कोई शाही जेल-ख़ाने इत्यादि नहीं होते थे। इसलिए उन्हें मुजाहेदीन लश्कर में तक़सीम कर दिया जाता था। इस्लामी इस्तिलाह में इन महिलाओं को मिल्क-ए-यमीन कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त मिल्क-ए-यमीन के सिलसिले में यह बात भी याद रखनी चाहिए कि इस्लाम बरसर-ए-पैकार दुश्मन की महिलाओं के साथ केवल इस वजह से कि वे बरसर-ए-पैकार हैं पुर्णतः आज्ञा नहीं देता कि जो भी दुश्मन है उनकी महिलाओं को पकड़ लाओ और अपनी लौंडियां बनालो बल्कि इस्लाम की शिक्षा यह है कि जब तक खूँरेज़ जंग न हो तब तक किसी को क़ैदी नहीं बनाया जा सकता। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ ۭ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۡ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ

(अल् अन्फाल : 68) अर्थात् किसी नबी के लिए जायज़ नहीं कि ज़मीन में खूँरेज़ जंग किए बग़ैर क़ैदी बनाए। तुम दुनिया के सामान चाहते हो जबकि अल्लाह आख़िरत पसंद करता है और अल्लाह कामिल प्रभुत्व वाला (और) बहुत हिक्मत वाला है।

यहां जब खूँरेज़ जंग की शर्त लगा दी तो फिर मैदान-ए-जंग में केवल वही महिलाएं क़ैदी के तौर पर पकड़ी जाती थीं जो जंग के लिए वहां मौजूद होती थीं। इसलिए कि वे केवल महिलाएं नहीं होती थीं बल्कि जंग की दुश्मन के तौर पर वहां आई होती थीं।

अतः इस्लाम इन्सानों को लौंडियां और ग़ुलाम बनाने के हक़ में कदापि नहीं है। इस्लाम के आरंभिक दौर में उस वक़्त के विशेष हालात में मजबूरन उसकी वक़्ती आज्ञा दी गई थी लेकिन आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़ी हिक्मत के साथ उनको भी आज़ाद करने की तरग़ीब दी और जब तक वे ख़ुद आज़ादी हासिल नहीं कर लेते थे या उन्हें आज़ाद नहीं कर दिया जाता था, उन से अहसान के सुलूक की ही ताकीद फ़रमाई गई।

और जब ये विशेष हालात ख़त्म हो गए और रियास्ती क़वानीन ने नई शक्ल इख़तियार कर ली जैसा कि अब प्रचलित है तो उसके साथ ही लौंडियां और ग़ुलाम बनाने का जवाज़ भी ख़त्म हो गया। अब इस्लामी शरीयत की दृष्टि से लौंडी या ग़ुलाम रखने का क़तअन कोई जवाज़ नहीं है बल्कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अब मौजूदा हालात में इस को हराम क़रार दिया है।

तलाक़ की शरायत ये हैं कि जब कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को पूरे होश-ओ-हवास में अपनी मर्ज़ी से तलाक़ दे तो तलाक़ चाहे ज़ुबानी हो या तहरीरी, प्रत्येक दो रूपों में होगी।

इसी तरह एक दफ़ा मुख से कही हुई तलाक़ भी तलाक़ ही शुमार होगी जबकि इद्दत के अंदर पति को रुजू का हक़ है इस शर्त के साथ कि यह तीसरी तलाक़ न हो। क्योंकि तीसरी तलाक़ के बाद न इद्दत में रुजू हो सकता है और न ही इद्दत के बाद नया निकाह हो सकता है, जब तक कि حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ वाली शर्त पूरी न हो अर्थात् यह पत्नी किसी दूसरे मर्द से निकाह करे और पति पत्नी के सम्बन्ध के बाद वहां से बग़ैर किसी मंसूबा बंदी के तलाक़ या ख़ुला के माध्यम से अलैहदगी हो जाए या उस पति का देहांत हो जाए तो तब यह महिलाएं इस पहले मर्द से

शेष पृष्ठ 10 पर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई. (भाग-10)

डबलिन शहर की ओर यात्रा

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

28 सितम्बर 2014 दिन इतवार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बज कर10 मिनट पर मस्जिद मर्यम पधार कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस अपने रिहायशी अपार्टमेंट में तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और हिदायात से नवाज़ा।

आज प्रोग्राम के अनुसार नैशनल मज्लिस-ए-आमला ख़ुद्दामुल अहमदिया, नैशनल मज्लिस आमला अन्सारुल्लाह और नैशनल मज्लिस-ए-आमला जमाअत आयरलैंड की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ अलग-अलग थीं।

इन मीटिंगज़ का प्रबन्ध होटल के एक कान्फ्रैंस रुम में किया गया था। ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कान्फ्रैंस रुम में पधारे और सबसे पहले नैशनल मज्लिस-ए-आमला ख़ुद्दामुल अहमदिया आयरलैंड की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग शुरू हुई। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर मोतमिद साहब ने बताया कि हमारी तीन मजालिस हैं और ख़ुद्दाम की संख्या 71 है और हमारा निरंतर नैशनल इजतेमा होता है। जिस के लिए हाल बुक करवाया जाता है और इजतेमा में स्पोर्टस भी होते हैं मजालिस से निरंतर सम्पर्क है और रिपोर्टस प्राप्त की जाती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मोहतमिम तर्बीयत से दरयाफ़त फ़रमाया कि क्या आपको ज्ञान है कि कितने ख़ुद्दाम शादीशुदा हैं और कितने नहीं हैं जिस पर मुहतमिम तर्बीयत ने ज्ञानने होने का इज़हार किया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप को ज्ञान होना चाहिए और आपके रिकार्ड में चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने मुहतमिम तजनीद से संबोधित होते हुए फ़रमाया कि निरंतर प्रत्येक ख़ादिम से तजनीद का फ़ार्म भरवाएं। फ़ार्म पाकिस्तान से मंगवा लें, यू.के से मंगवा लें और प्रत्येक ख़ादिम के कवायफ़ आपके रिकार्ड में होने चाहिऐं।

ख़ादिम का नाम, उसके पिता का नाम, आयु, तालीम, पेशा, आमद, शादीशुदा ग़ैर शादीशुदा इत्यादि।

हुज़ूर अनवर ने मुहतमिम माल से संबोधित होते हुए फ़रमाया कि असल यही है कि जो कुछा देना है वह आमद के अनुसार देना है परन्तु जो अपनी आमद के अनुसार नहीं देता या अपनी आमद प्रकट नहीं करता तो वह लिख कर दे कि मैं केवल इतना कुछा दे सकता हूँ।

मुहतमिम तर्बीयत से हुज़ूर अनवर ने पूछने फ़रमाया कि जो शादीशुदा लोग हैं उनकी जीवन बेहतर गुज़र रहा है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जिनका निकाह होता है उनकी कौंसलिंग होनी चाहिए। खाविंदों को पत्नीयों के हुक़ूक़ का पता होना चाहिए। शादी के उद्देश्य ये न हो कि रहने का स्टेटस मिल जाए। रिहायश मिल जाए। जो शादी की असल उद्देश्य है उसी की ओर ध्यान होनी चाहिए और तक़्वा को हमेशा मद्द-ए-नज़र रखना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया। नमाज़ों की ओर ध्यान दें। अब मस्जिद बना ली है तो उसे आबाद करें और दूसरी जगहों पर जहां-जहां सैंटर हैं वहां भी निरंतर नमाज़ों का इल्तिज़ाम करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुहतमिम शिक्षा से दरयाफ़त फ़रमाया कि ख़ुद्दाम के निसाब में कौन सी पुस्तक रखी है। इस पर मुहतमिम शिक्षा ने बताया पुस्तक "निज़ाम-ए-नो' की परीक्षा ली है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तक भी रखें। मुहतमिम शिक्षा ने बताया कि पुस्तक "हकीकतुल वह्यी" के सौ पृष्ठ निसाब में रखे हैं और अक्तूबर में इस की परीक्षा है। मुहतमिम तब्लीग़ को हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि तब्लीग़ के लिए आपने अपना टार्गेट स्वयं बनाना है। ख़ुद्दामुल अहमदिया इस लिए बनाई गई थी कि आप अपने मंसूबे और प्रोग्राम बनाएँ और काम करें। अपने तौर पर काम करें और सम्पर्क करें और सैमीनारज़ करें। आप पढ़े लिखे लोग हैं आप में से कुछ डाक्टरज़ हैं आप अपने पब्लिक रेलेशन्ज़ बढ़ाएं और मीटिंगज़ करें और लोगों को बुलाएँ। अब मस्जिद के उद्घाटन के बाद लोगों का ध्यान होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अब आपके पास दो मुबल्लिग़ भी हैं। उनको बुला कर प्रश्न -और-उत्तर के प्रोग्राम बनाएँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आमिला के प्रत्येक मेंबर ने कम से कम एक सम्पर्क करना है। एक सम्पर्क से मुराद एक फ़ैमिली से सम्पर्क है। पिछली तीन वर्षों में ख़ुद्दामुल अहमदिया ने कोई बैअत प्राप्त नहीं की। अतः अब अपने सम्पर्क क़ायम करें। मिलता करें, लोगों से सम्बन्ध बनाएँ और काम करें।

मुहतमिम तब्लीग़ ने बताया कि तब्लीग़ के लिए स्टॉल लगाए जाते हैं। जिस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह तो केवल एक माध्यम है और पुराना तरीक़ है। कब तक केवल उसी तरीक़ पर इन्हिसार करेंगे। आपको चाहिए कि तब्लीग़ के लिए और संदेश पहुंचाने के लिए नए-नए रास्ते Explore करें।

लीफ़ लेट्स की तक़सीम के बारे में हुज़ूर अनवर की सेवा में रिपोर्ट प्रस्तुत की गई कि ख़ुद्दाम ने पिछली तीन माह में 37 हज़ार लीफ़ लेट्स तक़सीम किए हैं और पिछले वर्ष 90 हज़ार लीफ़ लेट्स तक़सीम हुए थे।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आयरलैंड तो छोटा सा देश है। आप तो मुल्क काफी Cover कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पिछले वर्ष जामिया अहमदिया यू.के से फ़ारिगुल तहसील विद्यार्थियों की क्लास को स्पेन भिजवाया गया था तो उन्होंने दो तीन हफ़्तों में तीन लाख पमफ़्लेटस तक़सीम किए। अब इसी माह जामिया के आठ नौ लड़के सैर के लिए स्पेन गए थे उन्होंने 50 हज़ार से अधिक पमफ़्लेटस तक़सीम किए।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि यहां आयरलैंड में भी जामिया के विद्यार्थी को भिजवाया जाए।

हुज़ूर अनवर ने ख़ुद्दामुल अहमदिया को हिदायत देते हुए फ़रमाया कि आपको जहां भी अवसर मिलता है फ्लावरज़ तक़सीम करें, स्टेशन पर करें और दूसरी जगहों पर करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया स्थानीय हुकूमती इंतिज़ामिया और कौंसल इत्यादि से सम्पर्क करके दरख़्त लगाने का प्रोग्राम बनाएँ। पार्क में ही दो दरख़्त लगा दें। तो आप का परिचय होजाएगा और तब्लीग़ के लिए राह खुलेगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आप यहां ब्लड कंपेन आर्गेनाईज़ करें यदि यहां मलेरिया के कारण से एशीयन का ख़ून नहीं लेते तो स्थानीय लोकल आदमी आकर दे देंगे। पड़ोसी आकर शामिल हो जाएंगे। इस तरह आपकी ओर से यह प्रोग्राम आर्गेनाईज़ होगा और परिचय और राबतों का एक माध्यम बनेगा।

मुहतमिम माल से हुज़ूर अनवर ने बजट के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया। जिस पर उन्हों ने बताया कि ख़ुद्दाम का बजट दस हज़ार पाँच सद पाँच यूरो है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपके पास यह रिकार्ड होना चाहिए कि कमाने वाले कितने हैं और न कमाने वाले कितने हैं, विद्यार्थी कितने हैं और ऐसे कितने हैं जो विद्यार्थी नहीं परन्तु उनके पास कोई काम नहीं।

मुहतमिम ख़िदमत-ए-ख़लक़ को हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि

चैरिटी वाक का प्रोग्राम रखें और ख़ुद्दाम अपने वस्त्र पहन कर जाएं। कैप पर ऐसे शब्द हों जो आपकी तंज़ीम की निशानदेही कर रहे हों। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपने अपने देश के माहौल और हालात के दृष्टि से स्वयं नए नए रास्ते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मैं ने विभिन्न देशों के दौरों के मध्य ख़ुद्दाम की मजालिस आमिला की मीटिंगज़ में बड़ी तफ़सील के साथ हिदायात दी हुई हैं और वह अलफ़ज़ल में प्रकाशित हो चुकी हैं। इन हिदायात की रोशनी में समस्त विभाग अपने प्रोग्राम बनाएँ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इरादा करें और काम करें, अपने नमूने क़ायम करें नमाज़ों की ओर ध्यान दें। जिस काम को शुरू करें दुआ से करें दुआ की ओर ध्यान दें और अज़म से काम करें ।

नुमाइश का वर्णन होने पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ठीक है नुमाइश लगाऐं और प्रत्येक ऐसी चीज़ के लिए प्रयास करना है जिससे जमाअत का परिचय हो और तब्लीग़ के लिए रास्ते खुले। अतः आपने नुमाइश लगानी है। या चैरिटी वाक करनी है या स्टॉल लगाना है या कोई प्रोग्राम बनाना है तो इस लिए बनाना है कि तब्लीग़ के लिए रास्ते खुलें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तब्लीग़ के लिए प्रत्येक किस्म का लिटरेचर दें। पहले ये देख लें कि जिसको दे रहे हैं उसे किस चीज़ में दिलचस्पी है।

इस्लाम में दिलचस्पी है तो इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी दें। यदि इकनॉमिक्स में दिलचस्पी है तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की पुस्तक दें। अमन के क़ियाम में दिलचस्पी है तो "World Crisis and the pathway to peace" दें। प्रत्येक को इस की आवश्यकता और दिलचस्पी के अनुसार दें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। अब तक यहां के स्थानीय बाशिंदों से और हुक्काम से जो परिचय आपको हो चुका है इस को आगे बढ़ाएं। यह न हो कि जो सम्पर्क क़ायम हुए हैं और एक सम्बन्ध बना है इस को दें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तालीमी विभागों और पब्लिक लाइब्रेरीज़ में भी पुस्तकें रखवाएं "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी' Life of Mohammad, Islam Responce to contemprary Issues pathway to peace, The Blessed Model of the Holy Prophet Mohammad Salam and the Caricatures" भी लाइब्रेरी में रखवाएं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया Life of Mohammad सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लममज्लिस अन्सारुल्लाह यू.के ने लाख, डेढ़ लाख की संख्या में स्वयं प्रकाशित करके तक़सीम की है। जमाअत से कोई ख़र्च नहीं लिया। यदि आपने यह पुस्तक सस्ती कम क़ीमत पर प्राप्त करनी है तो अन्सारुल्लाह यू.के को कहें वह आपको दे देंगे। यह पुस्तक यू.के से मंगवा लें और इस पुस्तक की यहां भी तक़सीम चाहिए।

नैशनल मज्लिस-ए-आमला ख़ुद्दामुल अहमदिया की यह मीटिंग साढ़े ग्यारह बजे ख़त्म हुई। अंत में आमिला के सदस्य ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इसके बाद नैशनल मज्लिस-ए-आमला अन्सारुल्लाह आयरलैंड की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग शुरू हुई।

हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। इसके बाद क़ायद उमूमी से हुज़ूर अनवर ने मजालिस की संख्या के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया । क़ायद उमूमी ने बताया कि हमारी तीन मजालिस हैं और अंसार की संख्या 49 है।

क़ायद तर्बीयत से हुज़ूर अनवर ने तर्बीयती प्रोग्रामों के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया और हिदायत देते हुए फ़रमाया कि सबसे पहले नमाज़ की ओर ध्यान दें। सब अंसार बाक़ायदगी से पांचों नमाज़ें अदा करने वाले हों। फिर एम.टी.ए. के साथ जोड़ने की ओर ध्यान दें। बाक़ायदगी से एम.टी.ए. पर समय के ख़लीफा के ख़ुतबात, भाषण सुनें और दूसरे प्रोग्रामों से भी लाभ प्राप्त करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अंसार को इस ओर भी ध्यान दिलाएँ कि अपने बच्चों को प्यार से समझाया करें। सख़्ती से नहीं। अधिकतर अपने बच्चे इस लिए बिगाड़ देते हैं कि माता पिता सख़्ती करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया घरों में फ़ैमिलीज़ में जो बहू और दामाद के संबंध हैं उनमें ख़राबियां पैदा हो रही हैं। दोनों ख़ानदानों के जो बड़े हैं उनको चाहिए कि प्यार-ओ-मुहब्बत का माहौल पैदा करें और घर बसाने का प्रयास करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया घरों में एम.टी.ए. निरंतर देखें। इस में विभिन्न प्रोग्राम आ रहे होते हैं जिनमें कोई न कोई इस्लाही, तर्बीयती, पहलू वर्णन हो जाता है। जो अपना प्रभाव रखता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ख़ुतबात सुनाने की ओर विशेषता ध्यान दें और इस का जायज़ा भी लिया करें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अंसार को तिलावत क़ुरआन-ए-करीम की ओर निरंतर ध्यान दिलाएँ और इस का जायज़ा लिया करें कि कितने अंसार प्रतिदिन निरंतर तिलावत करते हैं।

क़ायद तब्लीग़ के प्रोग्रामों का जायज़ा लेने के बाद हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि आपकी नैशनल मज्लिस-ए-आमला के समस्त सदस्य और स्थानीय मजालिस आमिला के सदस्य के सपुर्द यह टार्गेट करें कि उनमें से प्रत्येक ने कम से कम एक सम्पर्क क़ायम करना है और उस को अहमदियत में लाने की प्रयास करना है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपकी केंद्रीय मज्लिस-ए-आमला की संख्यां 15 है। यदि तीसरा हिस्सा भी सफ़लता प्राप्त करे तो आप अंसार की वर्ष की पाँच बैअतें हो जाएँगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपके ज़ाती सम्पर्क और संबंध होंगे तो तब ही ये लोग आपके क़रीब आएँगे और फिर उन्हें अहमदियत का संदेश पहुंचाएं। तब्लीग़ करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कुछ लोग ज़ाती सम्पर्क तो कर लेते हैं परन्तु आगे तब्लीग़ी सम्पर्क नहीं बढ़ता। अपने इन राबतों को आगे बढ़ाने की प्रयास करें। अब मस्जिद के बनने के कारण से इस शहर में भी और सारे मुल्क में भी ध्यान होगा।

लीफ़ लेट्स की तक़सीम के हवाले से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अपना एक टार्गेट रखें और उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। जिन अंसार को अंग्रेज़ी ज़बान, नहीं भी आती तो उनके सपुर्द भी यह काम करें। विभिन्न जगहों पर लीफ़ लेट्स तक़सीम कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपने यह इंतिज़ार नहीं करना कि जमाअत आपको लिटरेचर देगी तो आपने तक़सीम करना है। आप स्वयं अपने बनाएँ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पहले अपने दो पृष्ठों का ब्रोशर में अमन और मुहब्बत का संदेश दें यह ब्रोशर तक़सीम करने के बाद फिर दूसरा ब्रोशर तक़सीम हो जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आमद के बारे में बताया जाए और आप के हवाले से बताया जाए कि अमन का क़ियाम आप अलैहिस्सलाम से ही है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह ब्रोशर और फ्लावरज़ निरन्तर तक़सीम करते रहीं। क़तरा-क़तरा से आगे बढ़ेंगे तो फिर बड़ी संख्या में तक़सीम होगा।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो पुराना तरीक़ा है कि एक दफ़ा स्टॉल लगा लिया यह पर्याप्त नहीं। स्टॉल लगाने का लाभ तो तब है कि स्टॉल पर लोग आएं और दिलचस्पी पैदा हो। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कम-से-कम हाथ में दें, शेष पृष्ठ 12 पर

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ02 का शेष

मुसालेहत कर ली और एक दूसरे के क़ैदी वापस कर दिए। इस तरह क़बीला तमीम में अमन क़ायम हो गया। अब यहां सज्जाह ने जब देखा कि इस की दाल गलनी मुश्किल है, जो मक़सद ले के आई थी वह पूरा नहीं हो सकता तो उसने बनू तमीम से बोरिया बिस्तर उठाया और मदीना की जानिब कूच कर दिया। निबाज की बस्ती में पहुंच कर ओस बिन ख़ुज़ैमा से इस की लड़ाई हुई जिसमें सज्जाह ने शिकस्त खाई और ओस बिन ख़ुज़ैमा ने इस तरह पर उसे वापस जाने दिया कि इस अमर का पुख़्ता इरादा करे कि वे मदीना की जानिब पेशक़दमी नहीं करेगी। इस वाक़िया के बाद अहल-ए-जज़ीरा की फ़ौज के सरदार एक जगह जमा हुए और उन्होंने सज्जाह से कहा अब आप हमें क्या हुक्म देती हैं। मालिक और वकीअ ने अपनी क़ौम से सुलह कर ली है। न वे हमें मदद देने के लिए तैयार हैं और न इस बात पर रज़ामंद कि हम उनकी सरज़मीन से गुज़र सकें। इन लोगों से भी हमने यह मुआहिदा किया है और मदीना जाने के लिए हमारी राह बंद हो गई है। अब बताओ हम क्या करें? सज्जाह ने जवाब दिया कि अगर मदीना जाने की राह बंद हो गई है तो भी फ़िक्र की कोई बात नहीं तुम यमामा चलो। उन्होंने कहा अहल-ए-यमामा शान-ओ-शौकत में हमसे बढ़े हुए हैं और मुसैलमा की ताक़त और क़ुव्वत बहुत ज़्यादा हो चुकी है। एक रिवायत यह भी है कि जब उसके लश्कर के सरदारों ने सज्जाह से भविष्य के बारे में पूछा तो उसने जवाब दिया कि عَلَيْكُمْ بِالْيَمَامَةِ، وَدُفُّوْا دَفِيْفَ الْحَمَامَةِ، فَإِنَّهَا غَزْوَةٌ صَرَّامَةٌ، لَا يَلْحَقُكُمْ بَعْدَهَا مَلَامَةٌ कि यमामा चलो। कबूतर की तरह तेज़ी से उन पर झपटो। वहां एक ज़बरदस्त जंग पेश आएगी जिसके बाद तुम्हें फिर कभी नदामत नहीं उठानी पड़ेगी। यह अलंकारों से परिपूर्ण सुसज्जित वाक्य सुनने के बाद जिसे उसके लश्कर वाले वही ख़्याल करते थे कि नबी है। इस को वह्यी हुई है। इस के लिए उनका हुक्म मानने के सिवा कोई चारा ही न था। इस का हुक्म माना।(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, अनुवादक शेख़ अहमद पानीपति, पृष्ठ 193 से 198 इस्लामी कुतुब ख़ाना) (उर्दू दायरा मआरिफ़ इस्लामीया, भाग 10 पृष्ठ 738 मुद्रित लाहौर)

सजाहि जब अपने लश्कर के हमराह यमामा पहुंची तो मुसैलमा को बड़ी चिंता पैदा हुआ। उसने सोचा कि अगर वह सज्जाह की फ़ौजों से जंग में व्यस्त हो गया तो इस की ताक़त कमज़ोर हो जाएगी। इस्लामी लश्कर इस पर धावा बोल देगा और इर्द-गिर्द के क़बायल भी इस की इताअत का दम भरने से इन्कार कर देंगे। यह सोच कर उसने सज्जाह से मुसालेहत करने की ठानी। पहले उसे तोहफ़े तहायफ़ भेजे। फिर कहला भेजा कि वे ख़ुद उस से मिलना चाहता है। उसने मुसैलमा को रसाई की इजाज़त दे दी। मुसैलमा बनू हनीफा के चालीस आदमियों के हमराह उसके पास आया और अकेले में इस से गुफ़्तगु की और इस गुफ़्तगु में मुसैलमा ने कुछ मुसज्जा मुक़फ़्फ़ा इबारतें सज्जाह को सुनाई जिन से वे बहुत प्रभावित हुआ। सज्जाह ने भी जवाब में इसी किस्म की इबारतें सुनाई। सज्जाह को पूरी तरह अपने क़बज़ा में लेने और हमनवा बनाने के लिए मुसैलमा ने यह तजवीज़ पेश की कि हम दोनों अपनी नबुव्वतों को एक साथ कर लें और आपस में शादी के रिश्ते में जुड़ जाएं,शादी कर लें। सज्जाह ने यह मश्वरा क़बूल कर लिया और मुसैलमा के साथ उसके कैंप में चली गई। तीन रोज़ तक वहां रहने के बाद यह अपने लश्कर में वापस आई और साथियों से वर्णन किया कि उसने मुसैलमा को हक़ पर पाया है इसलिए उस से शादी कर ली है। लोगों ने उस से पूछा कि कुछ मेहर भी निर्धारित किया। उसने कहा मेहर तो निर्धारित नहीं किया। उन्होंने मश्वरा दिया कि आप वापस जाएं और मेहर निर्धारित करके आएं क्योंकि आप जैसी शख़्सियत के लिए मेहर के बग़ैर शादी करना ज़ेबा नहीं। इसलिए वे मुसैलमा के पास वापस गई और उसे मेहर के बारे में अपनी आमद के उद्देश्य से अवगत किया। मुसैलमा ने उसकी ख़ातिर इशा और फ़ज्र की नमाज़ों में तख़फ़ीफ़ कर दी। अर्थात कि इशा और फ़ज्र की नमाज़ों में कमी कर दी और वह बंद कर दें। बहरहाल मेहर के बारे में यह समझोता हुआ कि मुसैलमा यमामा की ज़मीनों की लगान की आधी आमद सज्जाह को भेजेगा। सज्जाह ने यह मुतालबा किया कि वह अगले वर्ष की आधी आमदनी में से उस का हिस्सा पहले ही अदा कर दे। इस पर मुसैलमा ने आधे वर्ष की आमदनी का हिस्सा उसे दे दिया जिसे लेकर वो जज़ीरा वापस आ गई। बक़ीया आधे वर्ष की आमदनी के हुसूल के लिए उसने अपने कुछ आदमियों को बनू हनीफा ही में छोड़ दिया। सज्जाह बदस्तूर बनू तग़लब में मुक़ीम रही। इस के बारे में यह भी आता है कि बाद में उसने तौबा कर ली और इस्लाम क़बूल कर लिया। कुछ के नज़दीक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में उसने इस्लाम क़बूल किया यहां तक कि हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हो ने सूखे वाले वर्ष उसे उस की क़ौम के साथ बनू तमीम में भेज दिया जहां वह वफ़ात तक मुस्लमान होने की हालत में रही।(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, अज़ मोहम्मद हुसैन हैकल, उर्दू अनुवाद अज़शेख़ अहमद पानीपति, पृष्ठ 198-199)(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 271 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (अल् बिदाया वन्हाया, भाग 7 पृष्ठ 259 दारुल हिज्र बेरूत 1997 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को हुक्म दिया था कि तलीहा असदी के मामले से फ़ारिग़ हो कर मालिक बिन नुवेरह के मुक़ाबले के लिए जाएं जो बुतहा में ठहरा हुआ था।(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 257 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु जब बुतहा आए तो उन्होंने वहां किसी को भी नहीं पाया। जबकि उन्होंने देखा कि मालिक को जब उसे अपने मामले में तरद्दुद हुआ तो उसने अपने तमाम साथियों को उनकी जायदाद की देख-भाल के लिए भेज दिया और इकट्ठा होने की मनाही की है। पहले इस औरत से अलैहदगी भी हो चुकी थी या शायद इस वजह से भी इस में ख़्याल पैदा हुआ कि मुक़ाबला मुश्किल है। बहरहाल हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुख़्तलिफ़ फ़ौजी दस्ते इधर उधर रवाना किए और उनको हिदायत की कि जहां पहुंचें वहां पहले इस्लाम की दाअवत दें जो इस का जवाब न दे उसे गिरफ़्तार कर लाएंगे और जो मुक़ाबला करे उसे क़तल कर दें। इन्ही दस्तों में से एक दस्ता मालिक बिन नुवेरह को जिसके साथ बनू सलबा बिन यर्बू के कुछ आदमी आसिम, उबैद, अरीम और जाफ़र थे गिरफ़्तार करके ख़ालिद के पास उनको लाया गया। इस दस्ते के लोगों में जिन में हज़रत अबू कतादह रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे उनका मतभेद हो गया। यहां एक रिवायत उर्वा के बाप से है कि इस अवसर पर मुहिम के बाद लोगों ने तो शहादतें दीं कि जब हमने अज़ान दी, इक़ामत कही और नमाज़ पढ़ी तो उन लोगों ने भी ऐसा ही किया परन्तु दूसरों ने कहा कि नहीं ऐसा कुछ नहीं हुआ। हज़रत अबू कतादह रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बात की शहादत दी कि उन्होंने अज़ान दी, इक़ामत कही और नमाज़ पढ़ी। इस मतभेद शहादत की वजह से हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन लोगों को क़ैद कर दिया।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 273 से 272 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

मालिक बिन नुवेरह के क़तल के सम्बन्ध में दो तरह की रिवायतें मिलती हैं। यह रिवायत है कि मालिक बिन नुवेरह को क़तल किया गया था। एक रिवायत में है कि उस रात इस क़दर शदीद सर्दी थी कि कोई चीज़ उसकी ताब नहीं लाती थी। जब सर्दी और बढ़ने लगी तो हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुनादी को हुक्म दिया। उसने बुलंद आवाज़ से कहा कि أَدْفِئُوا أَسْرَاكُمْ कि अपने क़ैदियो को गर्म करो। अर्थात उनको सर्दी से बचाने का इंतिज़ाम करो लेकिन बनू कनाना में यह मुहावरा मुख़्तलिफ़ था। यहां के मुहावरे में इस शब्द के अर्थ यह थे कि क़तल करो। सिपाहियों ने इस शब्द का मफ़हूम मुक़ामी मुहावरे के एतबार से यह समझ लिया कि इन क़ैदियों के क़तल का हुक्म दिया गया है। इस पर उन्होंने इन सब को क़तल कर डाला। हज़रत ज़रार बिन अज़वर ने मालिक को क़त्ल किया और एक दूसरी रिवायत में है कि अबद बिन अज़ असदी ने मालिक को क़तल किया था। परन्तु कलबी कहते हैं ज़रार बिन अज़रवर ने उनको क़तल किया था। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को जब शोर-ओ-गुल सुनाई दिया तो वे अपने ख़ेमा से बाहर आए परन्तु उस वक़्त तक सिपाही इन सब क़ैदियों का काम खत्म कर चुके थे। अब क्या हो सकता था। उन्होंने कहा अल्लाह जिस काम को करना चाहता है वे तो बहरहाल हो कर रहता है।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 274-273 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

दूसरी रिवायत यह भी है कि हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मालिक बिन नुवेरह को अपने पास बुलाया। सज्जाह का साथ देने और ज़कात रोकने के सिलसिला में उस को तंबीह फ़रमाई और उसे कहा कि क्या तुम नहीं जानते कि ज़कात नमाज़ की साथी है अर्थात दोनों एक जैसे ही हुक्म हैं और तुमने ज़कात को देने से इन्कार कर दिया था। मालिक ने कहा तुम्हारे साहब का यही ख़्याल

था अर्थात बजाय इसके कहता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह ख़्याल था। रसूल के बजाय साहब या साथी कह कर पुकारा। हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया क्या वे हमारे साहब हैं। तुम्हारे साहिब नहीं? फिर हुक्म दिया हे ज़रार उस की गर्दन उड़ा दो। फिर उस की गर्दन उड़ा दी गई।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी अनुवादक, पृष्ठ 332- मकतबा अल् फुरकान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

उसके मरने की एक रिवायत यह है ।

तवारीख़ की रवायात के मुताबिक़ इस सिलसिला में अबू क़तादा ने खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से गुफ़्तगु की और दोनों के मध्य बेहस हुई और अबू कतादा ने हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से मतभेद करते हुए लश्कर को छोड़ कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास चले आए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से शिकायत की कि ख़ालिद औने मालिक बिन नुवेरह को क़तल करवाया है जबकि वह मुस्लमान था और फिर उस की बीवी से शादी कर ली है और न ही अरब के लोग दौरान-ए-जंग इस तरह की शादी को अच्छी बात समझते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अबू क़तादा के मत की पुरज़ोर हिमायत की। (तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 273-274 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अबू कतादः रज़ियल्लाहु अन्हु से इस बात पर सख़्त ब्रह्म हुए कि वह अमीर लश्कर हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की इजाज़त के बग़ैर लश्कर को छोड़ कर मदीना आए हैं और उनको हुक्म दिया कि वह हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास वापस जाएं। इसलिए अबू क़तादा हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास वापस चले गए।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 273 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

तारीख़ तिबरी में इस की मज़ीद तफ़सील यूं वर्णित है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु एक मुस्लमान के ख़ून का ज़िम्मेदार है और अगर यह बात साबित न हो सके तो इस क़दर तो साबित है कि जिससे उनको क़ैद कर दिया जाए। इस विषय में कि क़तल तो बहरहाल हुआ है हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बहुत इसरार किया। चूँकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपने अमाल और फ़ौजी आफ़सरान को कभी क़ैद नहीं करते थे इसलिए उन्होंने फ़रमाया हे उमर इस मुआमले में ख़ामोशी इख़तियार करो। ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु से इजतेहादी ग़लती हुई है। तुम उनके बारे में हरगिज़ कुछ मत कहो और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मालिक का ख़ून दियत (प्राण दंड के बदले में) अदा कर दिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ालिद को ख़त लिख कर आने को कहा। वह आए और उन्होंने इस वाक़िया की पूरी तफ़सील वर्णन की और माज़रत चाही। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी माज़रत स्वीकार की।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 273 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

एक रिवायत में हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के मदीना हाज़िर होने का वाक़िया यूं वर्णन हुआ है कि खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु इस मुहिम से पलट कर मदीना आए और मस्जिद नबवी में दाख़िल हुए। जब मस्जिद में आए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा तुमने एक मुस्लमान को क़तल कर दिया और फिर उस की बीवी पर क़बज़ा कर लिया। ख़ुदा की कसम मैं तुमको संगसार करूँगा। खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस वक़्त एक शब्द भी ज़बान से नहीं निकाला क्योंकि वह समझते थे कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का भी यही ख़्याल है। वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास चले गए। सारा वाक़िया सुनाया। क्षमा चाही इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनकी क्षमा क़बूल फ़रमाई। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़ुशनूदी हासिल कर के वह उठ आए। हज़रत उमर मस्जिद में बैठे थे। ख़ालिद ने कहा : हे उम्मे शम्ला के बेटे! मेरे पास आओ। क्या कहते हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु समझ गए कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उनसे राज़ी हो गए हैं जो हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु इस तरह बात कर के जा रहे हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ामोशी से उठ कर अपने घर चले गए और खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से कोई बात नहीं की।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 274 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

एक और रिवायत के मुताबिक़ मालिक का भाई मुतम्मिम बिन नुवेरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास अपने भाई का बदला लेने आया और उसने दरख़ास्त की कि हमारे क़ैदी रिहा कर दिए जाएं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ैदियों की रिहाई के लिए उस की दरख़ास्त क़बूल कर ली और हुक्म लिख दिया और मालिक की दियत (प्राण दंड के बदले में) अदा कर दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से सख़्त इसरार किया कि उनको एक तरफ़ कर दिया जाए और कहा कि उनकी तलवार में बेगुनाह मुस्लमान का ख़ून है परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा उम्र! यह नहीं हो सकता। मैं इस तलवार को जिसे अल्लाह ने कुफ़्फ़ार के लिए नयाम से निकाला हैं फिर नयाम में नहीं रखूँगा।

(तारीख़ तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 273 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

जब हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दियत अदा कर दी तो शरीयत के मुताबिक़ इन्साफ़ तो फिर क़ायम हो गया और मज़ीद कार्रवाई की ज़रूरत नहीं थी इसलिए हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि इस क़िस्से को अब बंद करो।

इस बारे में मालिक बिन नुवेरह का जो क़िस्सा है, इस के क़तल की विषय में जो इल्ज़ाम है इस का जवाब देते हुए हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी लिखते हैं। तौहफ़ा अस्ना अश्रिया उनकी किताब है इस में लिखते हैं कि दरअसल जो वाक़िया पेश आया उसकी ताबीर उन लोगों ने सही बयान नहीं की और जब तक सही हालात न मालूम हों उस वक़्त तक एतराज़ की कोई महत्तव ज़ाहिर है। सीरत-ओ-तारीख़ की विश्वसनिय किताबों में इस वाक़िया की तफ़सील यह है कि नबुव्वत का दावा करने वाले तुलेहा बिन ख़ूवीलद असदी की मुहिम से हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु जब फ़ारिग़ हो कर नवाहे बुतहा की तरफ़ मुतवज्जा हुए तो अतराफ़ और जवानिब की तरफ़ फ़ौजी दस्ते रवाना किए और हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद और तरीक़े के अनुसार उनको हिदायत की कि जिस क़ौम, क़बीला और गिरोह पर चढ़ाई करो वहां से अगर तुम्हें अज़ान सुनाई दे तो वहां क़तल और ग़ारतगरी से बाज़ रहो। अगर अज़ान सुनाई न दे तो उसे दारुल हरब क़रार देकर पूरी फ़ौजी कार्रवाई करो। संयोगवश इस दस्ता में जनाब अबू क़तादा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे जो मालिक बिन नुवेरह को पकड़ कर हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लाए जिसको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जानिब से बुतहा की सरदारी मिली हुई थी और इस के गर्द-ओ-नवाह के सद्कात की वसूली भी इसी के सपुर्द थी। जनाब अबू कतादः रज़ियल्लाहु अन्हु ने अज़ान सुनने की गवाही दी परन्तु उसी दस्ते की एक जमाअत ने कहा कि हमने अज़ान की आवाज़ नहीं सुनी परन्तु इससे पूर्व आस पास के विश्वसनीय लोगों के द्वारा यह बात विश्वसनीय और तर्कों के आधार पर मालूम हो चुकी थी कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विसाल की ख़बर सुन कर मालिक बिन नुवेरह के घरवालों ने ख़ूब जश्न मनाया था। औरतों ने हाथों में मेहंदी रचाई थी, ढोल बजाय थे और ख़ूब ख़ूब फ़र्हत-और-शादमानी का इज़हार किया था और मुस्लमानों की इस मुसीबत पर ख़ुश हुए थे। फिर मज़ीद एक बात यह हुई कि मालिक बिन नुवेरह से सवाल-ओ-जवाब के दौरान उसके मुँह से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए ऐसे अलफ़ाज़ निकले जिसके कुफ़्फ़ार और मुर्तद होने वाले अपनी गुफ़्तगु में आदी थे और इस्तिमाल करते थे। अर्थात قَالَ رَجُلُكُمْ اَوْ صَاحِبُكُم कि तुम्हारे आदमी या तुम्हारे साथी ने ऐसा कहा। इलावा अज़ीं यह बात भी मुनकशिफ़ हो चुकी थी कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विसाल की ख़बर सुन कर मालिक बिन नुवेरह ने वसूल शूदा सद्कात भी अपनी क़ौम को यह कह कर वापस कर दिए थे कि अच्छा हुआ उस व्यक्ति की मौत से तुमने मुसीबत से छुटकारा पा लिया। इन हालात और अपने सामने उस की गुफ़्तगु के अंदाज़ से हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को उस के इर्तिदाद का यक़ीन हो गया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस के क़तल का हुक्म दे दिया और जब मदीना में इस वाक़िया की इत्तिला पहुंची और फिर जनाब अबू कतादः रज़ियल्लाहु अन्हु भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु से नाराज़ हो कर दारुल खिलाफ़ा पहुंचे और क़सूरवार हज़रत ख़ालिद को ही ठहराया। तो आरंभ में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का यही ख़्याल था कि नाहक़ ख़ून हुआ है और बदला ज़रूरी है परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को तलब फ़र्मा कर तफ़तीश की। उनसे पूरा

वाक़िया पूछा और हालात-ओ-वाक़ियात का सारा राज़ आप पर स्पष्ट हुआ तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको बेक़सूर क़रार देकर उनसे कुछ तआरुज़ नहीं किया और उनको इसी साबिक़ा ओहदे पर बहाल रखा।

(तोहफ़ा अस्ना अश्रिया उर्दू, पृष्ठ 517-518 मुतर्जिम ख़लीलुल रहमान नुमानी दारुल इशात कराची 1982 ई.)

मालिक बिन नुवेरह के क़तल के विषय में एक और मुसन्निफ़ लिखते हैं कि मालिक बिन नुवेरह के सिलसिला की रवायात में बहुत ज़्यादा मतभेद है। उनके बारे में जो रिवायात हैं उनमें बहुत मतभेद है कि आया वह मज़लूम क़तल हुआ या यह कि वह क़तल का मुस्तहिक़ था।

मालिक बिन नुवेरह को जिस चीज़ ने हलाक किया वह उसका किबर और ग़रूर और घमंड था। जाहिलियत उसके अंदर बाक़ी रही वर्ना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद ख़लीफ़ा रसूल की इताअत और बैतुल माल के हक़ ज़कात की अदायगी में टाल मटोल नहीं करता। यह लिखते हैं कि मेरे तसव्वुर के मुताबिक़ यह व्यक्ति सरदारी और क़ियादत का शौक़ीन था और साथ ही साथ बनू तमीम के सरदारोँ में से अपने इन कुछ बड़ों से इस को द्वेष था जिन्हों ने इस्लामी ख़िलाफ़त की इताअत क़बूल कर ली थी और हुकूमत के सिलसिला में अपने वाजिबात को अदा कर दिया था। जो लोग ख़िलाफ़त की इताअत में आ गए थे और ज़कात इत्यादि अदा कर रहे थे उनसे उसको ख़लिश थी। इस के अक़्वाल-और-अफ़आल दोनों ही इस तसव्वुर का समर्थन करते हैं। इस का मुर्तद होना और सज्जाह का साथ देना, ज़कात के ऊंटों को अपने लोगों में तक़सीम कर देना, ज़कात का अबू बकर को देने से रोकना, तमर्रुद-और-इस्यान के सिलसिला में अपने क़राबतदार मुस्लमानों की नसीहतों को न सुनना यह सब इस पर फ़र्द-ए-जुर्म साबित करते हैं और इस से वाज़िह होता है कि यह व्यक्ति इस्लाम की बनिसबत कुफ़्र से ज़्यादा क़रीब था। एक तरफ़ मुस्लमान कहलाता था, कहलाना चाहता था और दूसरी तरफ़ कुफ़्र के क़रीब था और अगर मालिक बिन नुवेरह के ख़िलाफ़ कोई हुज्जत और दलील न हो तो इस का केवल ज़कात रोक लेना ही इस पर फ़र्द-ए-जुर्म आयद करने के लिए काफ़ी है। मुतक़द्दमीन के यहां यह एक साबित शूदा हक़्क़ीत है कि उसने ज़कात की अदायगी से इन्कार किया था। इब्ने अब्दुस्सलाम की किताब طبقات فُحُول الشُّعَرَاء में है कि यह सर्वसहमति की बात है कि ख़ालिद ने मालिक से गुफ़्तगु की और उस को इस के मौक़िफ़ से फेरने की कोशिश की लेकिन मालिक ने नमाज़ को तस्लीम किया। उसने कहा नमाज़ तो पढ़ लूँगा और ज़कात से पीछे हुआ और शरह मुस्लिम में इमाम नवदी मुर्तद होने वाले के सिलसिला में फ़रमाते हैं कि उन्ही के ज़िमन में वे हज़रात भी थे जो ज़कात को तस्लीम करते थे और इस की अदायगी से रुके नहीं थे लेकिन उनके सरदारोँ ने उन्हें इस से रोक दिया। कुछ लोग चाहते थे कि जिन पर नमाज़ों के साथ ज़कात फ़र्ज़ है वह ज़कात अदा करें लेकिन सरदारोँ ने उसे रोक दिया और उनके हाथ पकड़ रखे थे जैसा कि बनू-यरबू। उन्होंने अपनी ज़कात इकट्ठी की और इस को अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास भेजना चाहते थे लेकिन मालिक बिन नुवेरह ने उन्हें रोक दिया और उनकी ज़कात को लोगों में तक़सीम कर दिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मालिक बिन नुवेरह के विषय में पूरी तहक़ीक़ की और इस नतीजा पर पहुंचे कि ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु मालिक बिन नुवेरह के क़तल के इत्तिहाम में बरी हैं। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो इस सिलसिला में तथ्यों से दूसरों की बनिसबत ज़्यादा वाक़िफ़ थे और गहिरी निगाह रखते थे क्योंकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा थे और समस्त ख़बरें आप रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुँचती थीं और आप रज़ियल्लाहु अन्हु का ईमान भी सब पर भारी था। खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ देरी में आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत की पैरवी कर रहे थे क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ालिद को जो ज़िम्मेदारी सौंपी इस से उन्हें कभी माज़ूल नहीं किया और जबकि उनसे कुछ ऐसी चीज़ें सादिर हुईं जिनसे आप संतुष्ट नहीं थे। आप उनके उज़्र को क़बूल फ़रमाते और लोगों से फ़रमाते अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ालिद के उज़्र को क़बूल फ़रमाते और लोगों से फ़रमाते ख़ालिद को तकलीफ़ मत पहुँचाओ। वे अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार है जिसे अल्लाह तआला ने कुफ़्फ़ार पर मुसल्लत कर दिया था। (उद्धरित सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत-ओ-कारनामे अज़ डाक्टर अली मुतर्जिम, पृष्ठ 333 से 334 और 337 मकतबा अल् फ़ुरकान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

फिर एक और एतराज़ इसी ज़िमन में आगे यह भी आता है कि हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उम्मे तमीम पुत्री मिनहाल से शादी की थी। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में एतराज़ यह किया जाता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने दौरान जंग लैला पुत्री मिनहाल से शादी की और इद्दत गुज़रने का भी इंतिज़ार नहीं किया। इस शादी के विषय में तारीख़ तिबरी में इन शब्दों में वर्णन है कि हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उम तमीम मिनहाल की बेटी से निकाह किया था और ज़माना तहर को ख़त्म करने के लिए छोड़ दिया था क्योंकि अरब जंग के दौरान औरतों से ताल्लुक़ात को बुरा समझते थे और जो ऐसा करता उसे ताना देते थे।

(अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 273 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

अल्लामा इब्ने कसीर लिखते हैं कि जब वे अर्थात लेला पुत्री मिनहाल हो गई तो हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस से शादी की।

(अल् बिदाया व्नाहाया लेइब्ने कसीर भाग 3 पृष्ठ 318 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

अल्लामा इब्ने कसीर लिखते हैं कि उम्मे तमीम ने तीन महीने गुज़ार कर अपनी इद्दत पूरी की और फिर हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे निकाह का पैग़ाम भेजा जो उसने क़बूल कर लिया। (वुफ्यातुल ईमान, भाग 5 पृष्ठ 10 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1998 ई.)

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी इस एतराज़ का जवाब देते हुए लिखते हैं कि दरअसल यह क़िस्सा ही मनघड़त है इस लिए कि किसी मुस्तनद और मोतबर किताब में इस की कोई रिवायत नहीं मिलती। कुछ ग़ैर मोतबर किताबों में यह रिवायत मिलती भी है तो इस का जवाब भी साथ-साथ उसी रिवायत में मौजूद है कि मालिक बिन नुवेरह ने इस औरत को एक अरसा से तलाक़ दे रखी थी। यह कहा जाता है कि मालिक बिन नुवेरह की बीवी थी और उस को क़तल कर के हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने शादी फ़ौरन कर ली और असल में क़तल ही इसलिए किया था कि शादी करना चाहते थे लेकिन बहरहाल यह कहते हैं कि मालिक बिन नुवेरह उस औरत को एक अरसा से तलाक़ दे रखी थी और उसने जाहिलियत की पाएदारी में उसे यूँही घर में डाल रखा था। इसी रस्म जाहिलियत के तोड़ने पर क़ुरआन-ए-मजीद की यह आयत नाज़िल हुई थी। وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ तुम औरतों को तलाक़ दे दो और उनकी इद्दत पूरी हो जाए तो उन्हें रोके न रखो। इसलिए उस औरत की इद्दत तो कब की पूरी हो चुकी थी और निकाह हलाल हो चुका था। (तोहफ़ा अस्ना अश्रिया अनुवादक ख़लीलुल रहमान पृष्ठ 518 दारुल इशाअत कराची 1982 ई.) क्योंकि उसने तलाक़ देकर केवल अपने घर में रखा हुआ था।

हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हुकी शादी के विषय में एक और मुसन्निफ़ लिखते हैं कि उम्मे तमीम का नाम लैला पुत्री सिनान मिनहाल था। यह मालिक बिन नुवेरह की बीवी थी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की इस से शादी से विषय में बड़ा झगड़ा वाक़्य हुआ है। बड़ी लड़ाई झगड़े होते रहे, बड़ी बहसें चलें। इस का ख़ुलासा यह है कि कुछ लोगों ने ख़ालिद पर इत्तिहाम बाँधा कि वह तमीम के हुस्न-ओ-जमाल पर फ़रेफ़्ता थे और उस से इशक़ रखते थे इसलिए सब्र न कर सके और क़ैद में आते ही उस से शादी कर ली। इस का मतलब यह हुआ कि नऊज़ो बिल्लाह यह शादी नहीं बल्कि व्यभिचार था लेकिन यह कथन मनघड़त और स्पष्ट झूठा है। इस का कोई एतबार नहीं है क्योंकि क़दीम मराजे मुसादिर में इस की तरफ़ इशारा तक नहीं मिलता। जो भी रिवायतें हैं या सोर्स (sources)हैं उनमें कोई सबूत नहीं जो साबित हो रहा हो।

अल्लामा वरदी फ़रमाते हैं कि ख़ालिद ने मालिक बिन नुवेरह को इसलिए क़तल किया था कि उसने ज़कात रोक ली थी जिसकी वजह से उस का ख़ून हलाल हो गया था और उसकी वजह से उम्मे तमीम से इस का निकाह फ़ासिद हो गया था और मुर्तद होने वाले की औरतों के सिलसिला में शरई हुक्म यह है कि जब वे दारु हरब से जा मिलें तो उनको क़ैद किया जाए क़तल न किया जाए। जैसा कि इमाम सरखसी ने इस की तरफ़ इशारा किया है। जब उम्मे तमीम क़ैदी बिन कर आया तो ख़ालिद ने इस को अपने लिए मुंतख़ब कर लिया और जब वह हलाल हो गई तब उसने इस से अज़दवाजी ताल्लुक़ात क़ायम किए और शेख़ अहमद शाकिर इस मसला पर तालीक़ चढ़ाते हुए कहते हैं, मज़ीद वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं कि खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उम्मे तमीम और उस के

बेटे को मुल्क यमीन के तौर पर लिया था क्योंकि वे जंगी क़ैदी थे और इस तरह की महिलाओं के लिए कोई इद्दत नहीं। अगर वे गर्भवती हो तो गर्भ तक उस के मालिक का उस के क़रीब होना हराम है। अगर गर्भवती नहीं है तो केवल एक मर्तबा हैज़ आने तक दूर रहेगा। यह स्लामी धर्मशास्त्र के अनुरूप और जायज़ है इस पर आरोप प्रत्यारोप की गुंजाइश नहीं लेकिन ख़ालिद के मुख़ालेफ़ीन और दुश्मनों ने इस अवसर को अपने लिए ग़नीमत समझा और इस झूठे भ्रम में मुबतला हुए कि मालिक बिन नुवेरह मुस्लमान था और ख़ालिद ने उस को इस की बीवी के लिए क़तल कर दिया। इसी तरह ख़ालिद पर यह झूठा आरोप लगाया गया कि उन्होंने इस शादी के ज़रीया से अरब के आदात-और-अत्वार की मुख़ालेफ़त की है।

इसलिए अक्क़ाद का कहना है कि खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मालिक बिन नुवेरह को क़तल कर के उस की बीवी से मैदान-ए-क़िताल में शादी की जो जाहिलियत और इस्लाम में अरबों की आदत के ख़िलाफ़ और इसी तरह मुस्लमानों की आदात और इस्लामी शरीयत के हुक्मों के मुनाफ़ी है। अक्क़ाद का यह कथन सच्चाई से बिल्कुल दूर है। अरबों के हाँ इस्लाम से क़बल बहुत दफ़ा ऐसा होता था कि जंगों और दुश्मनों पर विजयी के बाद ख़वातीन से शादियां करते थे और उन्हें इस पर गर्व होता था। डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी इस बारे में लिखते हैं, यह सारा वाक़िया यही बयान कर रहे हैं कि शरई नुक़्ता नज़र से देखा जाए तो ख़ालिद ने एक जायज़ काम किया और इस के लिए शरीयत के अनुसार जायज़ तरीक़ा इख़तियार किया और यह कार्य उस ज़ात से भी साबित है जो ख़ालिद से अफ़ज़ल थे। अगर ख़ालिद पर यह एतराज़ है कि उन्होंने जंग के दौरान में या उस के फ़ौरन बाद शादी की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़व-ए-मुरेसी के फ़ौरन बाद जोवेरिया पुत्री हारिस से शादी कर ली थी और यह अपनी क़ौम के लिए बड़ी बाबरकत साबित हुई थीं कि इस शादी की वजह से उनके ख़ानदान के सौ आदमी आज़ाद कर दिए गए क्योंकि वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ससुराली रिश्ता में आ गए और इस शादी के बाबरकत असरात में से यह हुआ कि उनके वालिद हारिस बिन ज़रार मुस्लमान हो गए। इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़व-ए-ख़ैबर के फ़ौरन बाद सफिया बिंत-ए-हुयय्य बिंत-ए-अख़तब से शादी की और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस सिलसिला में उस्वा और नमूना मौजूद है तो अताब और मलामत की कोई वजह नहीं। (सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत-और-कारनामे अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी पृष्ठ 334 से 336 मकतबा अल् फ़ुरकान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को बिलावजह इस पर इल्ज़ाम लगाया जाए इसलिए यह तफ़सील मैंने बयान की है कि कुछ कम इलम आजकल भी यह सवाल उठाते हैं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु पर असल में यह एतराज़ करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस बारे में सही थे और हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नऊज़ो बिल्लाह इन्साफ़ से काम नहीं लिया और ग़लत रंग में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की हिमायत की है हालाँकि यह सारी तफ़सीलात जो उन्होंने देखें, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सारा जायज़ा लिया फिर फ़ैसला किया और इस सारे इल्ज़ाम से हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को बरी फ़रमाया।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की यमामा की तरफ़ रवानगी के बारे में आता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को यह हुक्म दे रखा था कि वह क़बीला असद, ग़तफ़ान और मालिक बिन नुवेरह इत्यादि से फ़ारिग़ हो कर यमामा का रुख करें और इस की बड़ी ताकीद कर रखी थी। शरीक बिन अब्दा फज़ारी वर्णन करते हैं। मैं इन लोगों में से था जो मार्का बुज़ाख़ह में शरीक थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे ख़ालिद की तरफ़ रवाना किया। मेरे साथ हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम एक ख़त था जिसमें लिखा था कि इसके बाद! तुम्हारे संदेश देने वाले के ज़रीया से तुम्हारा ख़त मिला। इस में मार्का बुज़ाख़ह में अल्लाह की फ़तह और नुसरत का तुमने वर्णन किया है और असद-और-ग़त्फ़ान के साथ जो मामला तुमने किया है वह वर्णित है और तुमने तहरीर किया है कि मैं यमामा की तरफ़ रुख कर रहा हूँ। तुम्हें मेरी वसीयत है कि अल्लाह वहिदा लाशरीक से तक़्वा इख़तियार करो और तुम्हारे साथ जो मुस्लमान हैं उनके साथ नरमी बरतो। उनके साथ बाप की तरह पेश आओ। हे ख़ालिद! ख़बरदार बनी मुग़ीरा की घमंड अहंकार से बचना। मैंने तुम्हारे विषय में उनकी बात नहीं मानी है जिनकी बात में कभी नहीं टालता। इसलिए तुम जब बनू हनीफा से मुक़ाबला में उतरो तो होशयार रहना। याद रखो बनू हनीफा की तरह अब तक किसी से तुम्हारा मुक़ाबला नहीं पड़ा। वे सब के सब तुम्हारे ख़िलाफ़ हैं और उनका मुल्क बड़ा वसीअ है। इसलिए जब वहां पहुँचो तो स्वयं फ़ौज की कमान सँभालो। मैमना पर एक व्यक्ति को और मेसरा पर एक व्यक्ति को और शहसवारों पर एक को निर्धारित करो। बड़े सहाबा और मुहाजेरीन-और-अंसार में से जो तुम्हारे साथ हैं उनसे बराबर मश्वरा लेते रहो और उनके फ़ज़ल-और-मुक़ाम को पहचानो। पूरी तैयारी के साथ मैदान-ए-जंग में जब दुश्मन तैयार हों तो उन पर टूट पड़ो। तीर के मुक़ाबले में तीर, नेज़े के मुक़ाबले में नेज़ा, तलवार के मुक़ाबले में तलवार। उनके क़ैदियों को तलवारों पर उठा लो। क़तल के ज़रीया उनमें ख़ौफ़-और-हिरास पैदा करो। उनको आग में झोंको। ख़बरदार मेरी हुक्म उदूली न करना। وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ۔

यह ख़त जब ख़ालिद को मिला तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस को पढ़ा और कहा हमने सुन लिया और हम उस की मुकम्मल फ़रमांबर्दारी करेंगे। ख़ालिद ने मुस्लमानों को अपने साथ तैयार किया और बनू हनीफा अर्थात मुसैलमा या जिनकी सरबराही मुसैलमा कज़्ज़ाब कर रहा था उनसे क़िताल के लिए रवाना हुए। अंसार पर साबित बिन केस बिन शम्अस अमीर निर्धारित थे। मुर्तद होने वाले में से जिनसे रास्ता में वास्ता पड़ता उस को इबरतनाक सज़ा देते। उधर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पीछे से ख़ालिद की हिफ़ाज़त के लिए एक बहुत बड़ी फ़ौज बेहतरीन असलाह से लैस रवाना की ताकि लश्कर-ए-ख़ालिद पर कोई पीछे से हमला-आवर न हो सके। ख़ालिद का गुज़र यमामा के रास्ते में बहुत से बद्दू क़बाइल से हुआ जो मुर्तद हो चुके थे। उनसे जंग कर के उन्हें इस्लाम की तरफ़ वापस लाए। रास्ता में सज्जाह की बच्ची-कुची फ़ौज मिली उनकी ख़बर ली। उन्हें क़तल किया और इबरतनाक सज़ाएं दीं। फिर यमामा पर हमला-आवर हुए। (सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत-और-कारनामे अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी पृष्ठ 353-354 मकतबा अल् फ़ुरकान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

जंग-ए- यमामा की तफ़सील इं शा अल्लाह आइन्दा बयान होगी।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

पृष्ठ 03 का शेष

निकाह कर सकती है।

जबकि एक ही वक़्त में तीन मर्तबा दी जाने वाली तलाक़ केवल एक ही तलाक़ शुमार होती है। इसलिए पुस्तकें अहादीस में हज़रत रुकाना बिन अबद रज़ियल्लाहु अन्हो की घटना मिलती है कि उन्होंने अपनी पत्नी को एक वक़्त में तीन तलाक़ें दे दीं, जिसका उन्हें बाद में अफ़सोस हुआ। जब मामला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुंचा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस तरह एक तलाक़ ही होती है। यदि तुम चाहो तो रुजू कर सकते हो। इसलिए उन्होंने अपनी तलाक़ से रुजू कर लिया और फिर उस पत्नी को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में दूसरी और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना-ए-ख़लाफ़त में तीसरी तलाक़ दी।

(मस्नद अहमद बिन हनबल, मिन मस्नद बनी हाशिम, बदाए मस्नद अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हदीस नंबर 2266)

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से एक अहमदी के किसी ग़ैर अहमदी का जनाज़ा पढ़ने के बारे में तथा बैंक के साथ विभिन्न विषयों में लेन-देन के बारे में मसायल दरयाफ़्त किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 14 जनवरी 2020 ई. में इन प्रश्नों के निमंलिखित उत्तर प्रदान फ़रमाए। हुज़ूर ने फ़रमाया

उत्तर : गैर अहमदियों की नमाज़ जनाज़ा पढ़ने के बारे में जमाअत अहमदिया की विचार शैली है कि जो व्यक्ति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्पष्ट मुकज़्ज़िब और मुकफ़्फ़िर था उसका जनाज़ा पढ़ना तो किसी तरह दरुस्त नहीं। लेकिन जो व्यक्ति हज़ूर के दआवी का इंकारी नहीं था लेकिन उसने हज़ूर के दावी की तसदीक़ भी नहीं की। ऐसे व्यक्ति की नमाज़ जनाज़ा पढ़ने वाले यदि दूसरे लोग मौजूद हों तो अहमदियों को उसकी नमाज़ जनाज़ा से बचना चाहिए। लेकिन यदि किसी जगह कोई मुसलमान फ़ौत हो जाए और उसका जनाज़ा पढ़ने वाला कोई मौजूद न हो तो अहमदी अपने इमाम की इक़तिदा में इसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ेंगे क्योंकि कोई कलिमागो बग़ैर नमाज़ जनाज़ा के दफ़न नहीं होना चाहिए।

ग़ैर हुकूमती बैंकों या मालियाती विभागों के साथ लेन-देन के विषयों में यदि सूद शामिल हो तो यह नाजायज़ है लेकिन यदि लेन-देन नफ़ा नुक़्सान की शराकत के तरीक़ पर हो तो जायज़ है।

इसी तरह हुकूमती बैंकों या हुकूमती मालियाती विभागों में जमा करवाई जाने वाली रक़ूम पर मिलने वाली अधिक रक़म सूद शुमार नहीं होती क्योंकि हुकूमती बैंक और मालियाती इदारे अपने सरमाया को रफ़ाही कामों पर लगाते हैं जिसके परिणाम में मुल्की बाशिंदों की सहूलतों के लिए विभिन्न मंसूबे बनाए जाते हैं, मईशत में तरक़्क़ी होती है और लोगों के देश के लिए रोज़गार के अवसरों पैदा होते हैं। इसलिए ऐसे बैंकों और मालियाती विभागों से मिलने वाले मुनाफ़ा को ज़ाती इस्तिमाल में लाया जा सकता है। इस में कोई हर्ज नहीं।

प्रश्न : एक महिलाएं ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि हुज़ूर अनवर ने अपने एक ख़ुत्बे जुमा में फ़रमाया है कि "सच्चे मोमिन को अपने पत्नी बच्चों के लिए भी दुआ करनी चाहिए क्योंकि हज़रत-ए-आदम अलैहिस्सलाम को पहला फ़ित्ना भी एक महिलाएं की वजह से पेश आया।" जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताबों में लिखा है कि यह बाइबल का वर्णन है कि हव्वा हज़रत-ए-आदम को गुमराही की तरफ़ लेकर गईं। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 4 फ़रवरी 2020 में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर प्रदान फ़रमाया।

हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : आप ने मेरे जिस ख़ुत्बे का हवाला दिया है, इस में भी मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इक़तिबास पढ़ा है। इस इक़तिबास में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह भी वर्णन फ़रमाया है कि तौरेत के अनुसार हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबला पर आने वाले बल्अम के ईमान के ज़ाए होने की वजह भी उसकी पत्नी ही थी, जिसे बादशाह ने कुछ ज़ेवरात दिखा कर लालच दी और उसने बल्अम को हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ बददुआ करने पर भड़काया और जिस वजह से बल्अम का ईमान ज़ाए हो गया।

इसके अतिरिक्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी कुछ तसनीफ़ात में क़ुरआन-ए-करीम के हवाले से यह मज़मून भी वर्णन फ़रमाया है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि आदम ने जान कर मेरे आदेश को नहीं तोड़ा बल्कि उसको यह ख़्याल गुज़रा कि हव्वाने जो यह फल खाया और मुझे दिया शायद उसको ख़ुदा की आज्ञा हो गई जो इस ने ऐसा किया। यही वजह है कि ख़ुदा ने अपनी किताब में हव्वा की बरीयत ज़ाहिर नहीं फ़रमाई परन्तु आदम की बरीयत ज़ाहिर की और इसकी निसबत फ़रमाया لَمْ نَجِدْ لَهُ عَزْمًا और हव्वा को सख़्त सज़ा दी।

इसी तरह एक जगह हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस मज़मून को भी वर्णन फ़रमाया है कि जिस तरह छेवें रोज़ के अंतिम हिस्से में आदम पैदा हुआ इसी तरह छेवें हज़ार के अंतिम हिस्सा में मसीह मौऊद का पैदा होना निर्धारित किया गया और जैसा कि आदम नह्हाश के साथ आज़माया गया जिसको अरबी में ख़िनास कहते हैं जिसका दूसरा नाम दज्जाल है ऐसा ही इस अंतिम आदम के मुक़ाबिल पर नह्हाश पैदा किया गया ताकि वह अनुमान लगाने वाले लोगों को हयात-ए-अबदी की लालच दे जैसा कि हव्वा को उस साँप ने दी थी जिसका नाम तौरेत में नह्हाशा और क़ुरआन में खन्नास है।

यह बात बाइबल के हवाले से वर्णन है या क़ुरआन आदेशों की रोशनी में, असल में इस में मर्द और महिलाएं दोनों की कुछ फ़ित्रती कमज़ोरियों की तरफ़ इशारा किया गया। इसलिए जहां इस में महिलाएं की यह फ़ित्रती कमज़ोरी वर्णन की गई है कि इस में लालच और लालच का माद्दा पाया जाता है वहां इस में अपनी अदा और चालबाज़ी के साथ मर्द को वरग़लाने और अपनी बात मनवाने का गुण भी पाया जाता है। इसी तरह जहां मर्द ख़ुद को बहुत होशयार और अक़्लमंद समझता है वहां इस में यह कमज़ोरी भी है कि वह बहुत जल्द महिलाएं की बातों में आ जाता है। और इस को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी वर्णन फ़रमाया है। इसलिए हदीस में आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

مَا رَأَيْتُ مِنْ نَاقِصَاتِ عَقْلٍ وَدِينٍ أَذْهَبَ لِلُبِّ الرَّجُلِ الْحَازِمِ مِنْ إِحْدَاكُنَّ يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ۔ (صحیح بخاری)

अर्थात् हे महिलाओं के गिरोह दीन-ओ-अक़्ल में निसबतन कम होने के बावजूद मैंने तुम से बढ़कर किसी चीज़ को नहीं देखा, जो बड़े,बड़े अक़्लमंद और मज़बूत इरादा वाले मर्द की अक़्ल मार दे।

महिलाओं के इसी फ़ित्रती नुक़्स और फ़ित्रती गुण से जहां माज़ी की कुछ तंज़ीमें अपना मुफ़ाद हासिल करती रही हैं वहां आज के इस तरक़्क़ी याफताह ज़माना में भी बड़े बड़े देशों की अधिकतर जासूसी तंज़ीमें फ़ायदा उठा रही हैं। इसलिए हम देख सकते हैं कि इन तन्ज़ीमों में बहुत सी महिलाओं को केवल इसलिए रखा जाता है कि वे अपनी अदाओं और चालाकियों से काम लेकर मुख़ालिफ़ तन्ज़ीमों या विभागों के मर्दों से उनके राज़ निकलवाए, और इस में उन्हें सफ़लता भी होती है।

अतः यह वह उमूर हैं जिनका सम्बन्ध महिलाएं और मर्द की इस दुनयावी ज़िंदगी के साथ है लेकिन इसके साथ इस्लाम ने यह शिक्षा भी दी है कि हुक़ूक़-ओ-फ़रायज़ के मामले में तथा नेकियों के बजा लाने पर सवाब के मिलने में महिलाएं और मर्दों में कोई फ़र्क़ नहीं। अतःजिस तरह मर्द की सलाहीयत और क़ाबिलीयत के अनुसार उसके कुछ हुक़ूक़ और कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं इसी तरह महिलाओं की सलाहीयत और क़ाबिलीयत के अनुसार उसके भी ऐसे ही कुछ हुक़ूक़ और कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं। इन हुक़ूक़-ओ-फ़राइज़ के बारे में उनमें कोई फ़र्क़ नहीं। इसी तरह जहां एक मर्द किसी नेकी के बजा लाने पर सवाब का हक़दार होता है इसी तरह महिलाएं भी इस नेकी के बजा लाने पर इसी क़दर और कुछ उमूर में अपनी सलाहीयत और क़ाबिलीयत की बिना पर निसबतन कम मशक़्क़त वाली नेकी बजा लाने पर मर्द के बराबर और कुछ सूरतों में इस से अधिक सवाब की हक़दार क़रार पाती है। इस्लाम की यह वह सुन्दर शिक्षा है जिसका मुक़ाबला दुनिया का कोई और मज़हब या दुनिया की कोई और शिक्षा कदापि नहीं कर सकती।

प्रश्न : गुलशने वक़्फ़ नौ नास्रात जुलाई 2012 ई. में एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि एक दफ़ा मैंने मीना-बाज़ार में देखा था कि मेहंदी के स्टॉल पर signs थे कि वह मुँह पर face paint करते हैं और tattoos भी लगाते हैं। तो क्या यह इस्लाम में जायज़ है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : जो tattoos लगाते हैं और face paint करते हैं, वे ग़लत करते हैं। मेहंदी के स्टॉल पर केवल मेहंदी होनी चाहिए। यदि लजना की सदर ने यह इस तरह रखा हुआ था तो बिल्कुल ग़लत किया हुआ था। मुँह पर भी मेहंदी लगा दो, पागल बना दो, कार्टून बना दो। अल्लाह तआला ने इन्सान बनाया है तुम उसको जानवर बना दो। मेहंदी का जो स्टॉल है, उस पर मेहंदी केवल हाथ पर लगा लो (इस अवसर

पर हुज़ूर अनवर ने हाथ की सीधी और उल्टी तरफ़ तथा कलाई तक इशारा करके फ़रमाया कि) यहां तक लगा लो, जो तुम महिलाओं का सिंघार है, इस में जायज़ है। लेकिन मुँह पर मेहंदी लगाना या tattooing करवाना इस्लाम में मना है। (इस अवसर पर हुज़ूर अनवर ने सदर साहबा लजना कैनेडा से भी उत्तर माँगा बताएं कि ऐसा क्यों किया हुआ था। और फिर उनके उत्तर पर हुज़ूर अनवर ने मज़ीद फ़रमाया face painting किस लिए रखी थी? नहीं होनी चाहिए। यहां वे जो जिन भूत बनाते हैं, वे अपने बनाना था। (सदर साहबा के अर्ज़ करने पर कि तब्लीग़ के लिए किया था, हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया) तब्लीग़ के लिए किया था, तो तब्लीग़ के लिए केवल face painting ही रह गई है। चेहरे बिगाड़ने का किसी को कोई हक़ नहीं पहुंचता। इस्लाम ने इस का बड़ा स्पष्ट तौर पर आदेश दिया हुआ है। नई नई रस्में न पैदा करें। रस्में तो आप लोग पैदा कर रहे हैं, बिदआत तो आप लोग लजना वाले पैदा कर रहे हैं। तो इस्लाह अपने क्या करनी है? इसी तरह नेकी के नाम पर बिदआत अंदर घुसती हैं। हज़रत-ए-आदम को जो शैतान ने भड़काया था, यह नहीं कहा था कि तुम यह करो तो इस से बड़ा लुतफ़ उठाओगे। पहले उसने नेकी की बात करके कहा था कि यह करो, यह बड़ी नेकी है और तुम हमेशा के लिए नेक बिन जाओगे। शैतान ने आदम को इसी तरह भड़काया था नाँ? हमेशा के लिए नेक बनाने के वादा पर, हालाँकि वे शैतानी वादा था। तो यही शैतानी काम आप लोग कर रहे हैं। यह नई नई बिदआत पैदा कर रहे हैं। लजना और ओहदेदारों का काम यह है कि ख़लीफ़-ए-वक़्त के मुँह को देखें कि वह क्या कह रहा है। अपनी अपनी बिदआत न पैदा करें, अपनी अपनी रस्में न पैदा करें। और बचियो! तुम लोग मेरी जासूस बनो और सही सही बातें बताया करो। ठीक है।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी ऐस लंदन)(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 28 मई 2021)

★ ★ ★

अहमदी विद्यार्थी ध्यान दें
(जामिआ अहमदिया क़ादियान में प्रवेश के लिए)

जामिआ अहमदिया क़ादियान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा स्थापित किया हुआ वह पवित्र संस्थान है जहां से अब तक सैंकड़ों उल्मा और मुबल्लेग़ीन शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं और इस्लाम की सच्ची शिक्षा को दुनिया के किनारों तक पहुंचाने का कर्तव्य अदा कर रहे हैं। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भी कई अवसरों पर अहमदी विद्यार्थियों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़ायम करदा मुक़द्दस दीनी संस्थान से शिक्षा प्राप्त करके सिलसिला की ख़िदमत की तरफ़ ध्यान दिलाया है। इस लिए सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आदेशों की रोशनी में ज़्यादा से ज़्यादा वाकफ़ीन नौ और ग़ैर वाकफ़ीन नौ विद्यार्थियों को जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेकर दीनी तालीम हासिल करके सिलसिला की ख़िदमत के लिए आपने आपको पेश करना चाहिए।

शैक्षणिक वर्ष 2022-2023 ई. के लिए जामिआ अहमदिया में दाख़िला की कार्रवाई अप्रैल के महीने 2022 ई. से शुरू हो गई है। वर्तमान हालात में जामिआ अहमदिया में दाख़िला के इच्छुक विद्यार्थियों के दाख़िला की कार्रवाई ऑनलाइन ही की जा रही है। इस लिए वे विद्यार्थियों जो जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेना चाहते हैं वे विभाग वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क करें और जल्द से जल्द जामिआ अहमदिया का दाख़िला फ़ार्म भर करके दफ़्तर वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) में मेल के माध्यम से या डाक से भिजवाएं। दाख़िला की शर्तों के लिए विभाग वक़्फ़-ए-नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क किया जा सकता है।

(सदर नैशनल कैरीयर प्लैनिंग कमेटी वक़्फ़-ए-नौ भारत)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

127वां जलसा सालाना क़ादियान 23, 24, और 25 दिसम्बर 2022 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 127वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 23,24,25 दिसंबर 2022 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन॥

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

सालाना इज्तिमाआत 2022 ई.

सय्यदना हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ज़ेली तंज़ीमात मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया, मज्लिस अंसारुल्लाह और लजना इमाइल्लाह के सालाना इज्तिमाआत के लिए तिथि 21,22,23 अक्तूबर 2022 ई. दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार की तिथियों की दुआ तथा प्रेम पूर्वक स्वीकृति प्रदान की है। लोग इसके अनुसार दुआओं के साथ इन इज्तिमाआत में शामिल होने की हर सम्भव कोशिश करें।

(सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 16 June 2022 Issue No.24

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

पृष्ठ 5 का शेष

परिचय तो हो जाएगा।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हिदायत तो ख़ुदा तआला ने अपने हाथ में रखी है। परन्तु आप का काम संदेश पहुंचाना है। कब ब्रेक थ्रो होता है ख़ुदा तआला को पता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप सब अंसार को टार्गेट दें। यहां पढ़े लिखे डाक्टर साहबान हैं। उनके अपने रवाबित और संबंध हैं। ये भी लीफ़ लेट्स तक़सीम करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपको नए तरीक़ एक्सप्लोर करने पड़ेंगे। केवल पुराने तरीक़ों पर काम नहीं होगा। आप तर्बीयत और तब्लीग़ दो काम कर लें तो होगा।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अन्सारुल्लाह चालीस वर्ष से ऊपर हैं। अब कोई फ़ैशन इत्यादि की आयु तो नहीं है। इस लिए जिनकी दाढ़ी नहीं है वह दाढ़ी रख लें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किसी ने कहा कि लोग दाढ़ी नहीं रखते। इस पर आप ने फ़रमाया। जितना जिसका हम से सम्बन्ध है वह आप ही रख लेगा।

क़ायद माल से हुज़ूर अनवर ने बजट के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया तो उन्होंने बताया कि चार हज़ार यूरो बजट है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप में तो डाक्टरज़ कमाने वाले हैं। आपका तो ख़ुद्दाम से ज़्यादा चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया बजट ग्रासरूट लेवल पर बनना चाहिए। यह नहीं कि घर बैठ कर बना लिया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कुछा इन्कम के अनुसार होना चाहिए जो इन्कम नहीं बताता तो उसे कह दें कि लिख कर दे दो में केवल इतना दे सकता हूँ इस से ज़्यादा नहीं दे सकता। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया किसी के पीछे न पड़ें और किसी से ज़बरदस्ती करके ग़लत व्यवहार न करें।

क़ायद इशात (प्रकाशित) ने बताया कि हमने रिसाला "अंसारुद्दीन" प्रकाशित किया है और पहली दफ़ा निकाला है और हमें हर कापी पाँच यूरो में पड़ी है इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़र्मा रकीम प्रैस यू.के से प्रकाशित करवाईं। सस्ता हो जाएगा।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अन्सारुल्लाह यू.के ने पुस्तक Life of Mohammad सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक लाख प्रकाशित करवाए है दो सद 50 पृष्ठ की पुस्तक है। उनकी फ़ी पुस्तक साठ पीनस की पड़ी है। यह पुस्तक आप अन्सारुल्लाह यू.के से मंगवा लें। वे आपको असल ख़र्च पर प्रदान कर देंगे।

क़ायद सेहत जस्मानी ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि हम प्रयास कर रहे हैं कि सब अंसार कोई न कोई वरज़िश करें उस समय 35 अंसार वरज़िश करते हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उनसे सैर करवा लिया करें। सब अंसार सैर करें और प्रयास करें कि अंसार चैरिटी वाक में हिस्सा लें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपने अपने लिए जो पुस्तकें लिटरेचर प्रकाशित करना है वह अपने सैंटर रिज़र्व से प्रकाशित करवा लें। और जो यू.के से मंगवानी है वह वहां से मंगवा लें।

मज्लिस-ए-आमला अन्सारुल्लाह आयरलैंड की यह मीटिंग ग्यारह बजकर 50 मिनट पर ख़त्म हुई। अंत में मज्लिस-ए-आमला के सदस्य ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप फ़ोटो खिचवाने का सौभाग्य पाया।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार नैशनल मज्लिस-ए-आमला जमाअत आयरलैंड की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग शुरू हुई। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर के पूछने पर जनरल सेक्रेटरी ने बताया कि आयरलैंड में तीन जमाअतें हैं और हमें कार-गुज़ारी रिपोर्ट प्राप्त होती हैं।

नैशनल सेक्रेटरी तर्बीयत से हुज़ूर अनवर ने तर्बीयती प्रोग्रामों के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया जिस पर सेक्रेटरी तर्बीयत ने बताया कि हम नमाज़ की ओर ध्यान दे रहे हैं। हमने अशरा अस्सलात भी मनाया है। मस्जिद मर्यम गालवे और बैतुल हादी डबलिन के अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में घरों में भी नमाज़ सैंटर बनाए गए हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया क्या कोई ऐसा सिस्टम है कि आप को पता लगे कि लोग नमाज़ पर आ रहे हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कितने अंसार, ख़ुद्दाम नमाज़ पर आ हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ख़ुद्दाम की ओर ध्यान दें कि वह भी ज़्यादा से ज़्यादा नमाज़ पर आएं। सदर साहब ख़ुद्दामुल अहमदिया नमाज़ों पर लाने के लिए प्रोग्राम बनाएँ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत का भी जायज़ा लें। आपके पास यह इन्फ़ार्मेशन होनी चाहिए कि कितने लोग प्रतिदिन तिलावत करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने मुबल्लिग़ इंचार्ज इब्राहीम नून साहब से संबोधित होते हुए फ़रमाया कि आपकी डयूटी है कि जायज़ा लें कि कितने अहमदी, अंसार, ख़ुद्दाम, अतफ़ाल विभिन्न जगहों पर रह रहे हैं। और आप किस तरह नमाज़ में अपनी हाज़िरी बढ़ा रहे हैं। शेष आगे..... ★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

ए-कश्शाफ़ लिखते हैं कि जब ग़िज़ा जानवर के मादा में जाती है तो इस का निचला हिस्सा गोबर बन जाता है और मध्य का हिस्सा दूध बिन जाता है और ऊपर का हिस्सा ख़ून बिन जाता है। हालाँकि आयत साफ़ बता रही है कि फर्स् और ख़ून में से होते हुए दूध का माद्दा आता है अर्थात फर्स् की हालत होती है फिर ख़ून की फिर दूध की और उन पहली दो चीज़ों में से किसी को भी इन्सान ख़ुशी से खाने को तैयार नहीं होता। न गोबर खाने पर राज़ी हो सकता है और न ख़ून पीने पर ख़ुशी से तैयार हो सकता है लेकिन जब वही ख़ून दूध बन जाता है तो उसे ख़ूब मज़े लेकर पीता है और इस में फर्स् की गंदगी और ख़ून के ज़हरों में से कुछ भी बाक़ी नहीं रहता।

इस आयत का यह मतलब नहीं कि कोई थोड़ी सी मिक़दार में भी दूध नहीं बना सकता। सम्भव है किसी वक़्त लोग कुछ दूध भी बना लें लेकिन इस तरह सारी दुनिया को ग़िज़ा नहीं पहुंचा सकती। यूं तो लोग गेसों से पानी भी बना लेते हैं लेकिन वे चंद क़तरे पानी के बादलों का काम नहीं दे सकते। इसी तरह अगर किसी वक़्त कोई व्यक्ति घास पात से दूध भी बना ले तो ताज्जुब नहीं परन्तु दुनिया को ग़िज़ा देने का काम फिर भी जानवरों के सपुर्द ही रहेगा जिस तरह पानी मुहय्या करने का काम बादलों के सपुर्द है।

इस आयत में इस तरफ़ भी इशारा किया है कि इन्सान आहार को गंदा तो कर सकता है लेकिन इस से दूध नहीं बना सकता। इसी तरह इन्सान नबियों की तालीम को लेकर ख़राब तो कर देते हैं लेकिन इन्सान, दिमाग़ों में पाई जाने वाली ग़ैर मुसफ़्फ़ी फ़ितरती सदाक़तों को मुसफ़्फ़ी और उच्च रूहानी तालीम नहीं बना सकते।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग चार, पृष्ठ 192 मुद्रित 2010 क़ादियान)

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
﴿ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار﴾ (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निमार्ण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad